निरन्तर श्रीनाम का स्मरन उच्चारन करे तिसको थोरे ही श्रमसे महाप्रकाश हृदय कमल में हो जाता है सन्देह नहीं, रटन अखण्ड चाहिये ॥७०॥

शुकपुराणे श्रीअगस्त्यवाक्यं सुतीक्ष्णं प्रति

श्रीमद्रामेतिनामैव जीवानां च जीवनम् ।
कीर्त्तनात्सर्वरोगेभ्यो मुच्यते नात्र संशयः ॥७१॥

शुक पुरान में श्री अगस्तजू का वचन सुतीक्षण महाप्रेमी शिष्य से श्रीमान् रामनाम ही सब जीवन को जिवावन हारो है। श्री रामनाम कीर्त्तन स्मरन किये सब रोगन से छूट जाता है॥ ७१ ॥

ब्रह्माण्डशतदानस्य यत्फलं समुदाहृतम् ।
तत्फलादधिकं विद्यात्सकृच्छ्रीराममुच्चरन् ॥७२॥

सौ ब्रह्माण्ड दान का जो फल है तिससे अधिक फल एक बार श्रीरामनाम के कहे प्राप्त होत है। कौन अभागी को श्री रामनाम न भावे ॥७२॥

तत्रैव श्रीशिववाक्यं शिवां प्रति

यथैव पावको देवि रजसाच्छन्नतां व्रजेत् ।
तथा विश्वासहीनानां नास्तिनामार्थवैभवम् ॥७३॥

विचारि करिके देखो ? इस जीव से एक पैसा खर्च नहीं हो सकता है; तिसको श्रम बिना अनन्त फल का लाभ होता है, तो भी श्रीरामनाम के सन्मुख नहीं होता। उसी स्थल में श्रीशङ्कर का वचन पार्वतीजू से है–हे देवि! जैसे आग धरि करिके छिपी हुइ चमत्कार समेत नहीं मालूम होती, तैसेही विश्वासहीनन को श्रीरामनाम महाऐश्वर्य्य शक्ति प्रगट नहीं होता। जब प्रतीत उपजे तब सहज में शक्ति समुझि पड़े ॥७३॥

अहोभाग्यनराः सर्वे नामसंलग्नमानसाः ।
पावयन्ति जगत्सर्वं रामनामार्थचिन्तनात् ॥७४॥

श्रीरामनाम में जिसका मन वचन सकल विश्वास छोड़िके लगा है सो महाभाग्यमानन में शिरोमनि हैं श्रीरामनाम अर्थ चिन्तन से सब लोकन को पावन करते हैं ॥७४॥

यत्प्रभावं समासाद्य शुको ब्रह्मर्षिसत्तमः ।
जपस्व तन्महामन्त्र रामनामरसायनम् ॥७५॥

जौन श्रीरामनाम के प्रभाव को सुनि गुनि के श्रीशुकदेवजी ब्रह्मर्षिन में श्रेष्ठ हो गये, सोई श्रीरामनाम महामन्त्रसार रसन को सदन सनेह सहित सुमिरन करो ॥७५॥

पुराणसंग्रहे श्रीसूत वाक्यं शौनकं प्रति

इदानीं रामनाम्नस्तु रहस्यं प्रवदामि ते ।
यच्छ्रुत्वा च पठित्वा च नरो याति परां गतिम् ॥७६

पुरान संग्रह में श्रीसूतजी का वचन शौनक प्रति है—अब हम श्रीरामनामका गुप्त रहस्य कहते हैं जिनके सुनने पढ़ने से जीव परम पद जायँगे सही ॥७६॥

सर्वेषां मन्त्रवर्गाणां रामनाम परं स्मृतम् ।
गोप्यं श्रीपार्वतीशस्य जीवनं चित्तशोधकम् ॥७७॥

अनन्त मन्त्रन में श्रेष्ठ श्रीरामनाम है। महागोप्य है, श्रीमहादेव जू के जीवन हैं, चित्त को सोधन करि देते हैं ॥७७॥

सुलभं सर्वजीवानामनायासेन सिद्धिदम् ।
सर्वोपायं विहायाशु जप्तव्यं प्रेमतत्परैः ॥७८॥

सब जीवन को सुलभ महासिद्धिप्रद श्रीरामनाम है। सर्व उपाय को त्यागि के श्रीरामनाम जपना उचित है, प्रेम तत्परन

को । श्रीरामनाम सर्वोपरि जानिके जपनो चाहिये ॥७८॥

येन केन प्रकारेण जपंमोक्षप्रदं नृणाम् ।
एवंरीत्या जपेद्यस्तु रामनाममनुत्तमम् ॥७९॥

श्रीरामनाम को चाहे जौन भाँति से उच्चारन करे मोक्ष अवश्यमेव देते ही हैं । औ जौन जन या रीति से श्रीरामनाम परमोत्तम का जप करते हैं ॥७९॥

तस्य पाणितले सिद्धिरनायासेन सत्वरम् ।
सत्यं वदामि सिद्धान्तं सर्वं कलिमलापहम् ॥८०॥

तिनके करतल में सब सिद्धि श्रम बिना शीघ्र प्राप्त होती है, सत्य सत्य हम कहते हैं । सकल सिद्धान्तसार श्रीरामनाम है सब पापन को नाशक हैं ॥८०॥

पृष्ट्वा रीतिर्यथातथ्यं गुरोः सान्निध्यतो मुने ।
तत्पश्चादभ्यसेन्नाम सर्वेश्वरमतन्द्रितः ॥८१॥

श्रीसतगुरु समीप सेवा विधि पूर्वक करिके जप स्मरन की रीति से पूछि लेवे, तिसके पश्चात् आलस त्यागि के श्रीरामनाम अभ्यास में निरन्तर तत्पर हो जाय श्रीरामनाम को सर्वेश्वर विचारि के ॥८१॥

स्वल्पहारं तथानिद्रां स्वल्पवाक्यं निरन्तरम् ।
मिथ्यासंभाषणंत्यक्त्वा तथा च गमनादिकम् ॥८२॥

भोजन स्वल्प पावे, शुद्ध अन्न पापरहित औ सोवे-थोड़ा, बचन बहुत कम उच्चारन करे, असत्य वचन सर्वथा त्याग करे, चलना, फिरना, शेरतमाशा, सर्वकौतुक क्रीड़ा, वामा संसर्ग, विशेष से त्याग देवे ॥८२॥

इहैव लभते नित्यं परिकराणां समागमम् ।
तथा नानारहस्यानां ज्ञानंसंजायते ध्रुवम् ॥८३॥

या रीति से श्रीरामनाम महामोद धाम सकल लोकाभिराम को जप जौन जन बड़भागी करते हैं तिनको श्रीसीताराम नित्य परिकरन का साक्षात् दर्शन होता है तथा नाना प्रकार के रहस्य का ज्ञान विज्ञान साक्षात् उनको हो जाता है, सन्देह न करना सांच मानना ॥८३।

नाम्नः परात्परैश्वर्यं कथं वाचा वदामि ते ।
स्मरणाल्लक्ष्यते विश्वं रामरूपेण भास्वरम् ॥८४॥

श्रीरामनाम का परात्पर ऐश्वर्य शक्ति वचन से कौन प्रकार निरूपन करें जिनके स्मरन कीर्त्तन किये सब विश्व महा प्रकाशमान रामरूप स्पष्ट जानि पड़ता है इसके आगे और सब सिद्धिता धूरि, विनाशमान हैं ॥८४॥

भारतविभागे

सर्वलक्षणहीनोऽपि युक्तो वा सर्वपातकैः ।
सर्वं तरति तत्पापं भावयन्नाममङ्गलम् ॥८५॥

भारत विभाग में लिखा है के—सकल शुभ लक्षणों करिके हीन होय तथा सब पातकों करिके युक्त होय सो भी सब पापरूप महाघोर समुद्र तरि जाता है । श्रीरामनाम महामंगलधाम का स्मरन कीर्त्तन रूप भावना करते हुये ॥८५॥

प्राणप्रयाणपाथेयं संसारव्याधिभेषजम् ।
दुःखशोकपरित्राणं श्रीरामेत्यक्षरद्वयम् ॥८६॥

प्राण के कूच समय को श्रीरामनाम परमपुष्ट एक रस निर्वाहक राह खर्च है । संसार रूपी रोग की औषधि शिरोमनि है । नाना प्रकार के दुःख शोक तिससे रक्षक है, श्रीरामनाम मनहरन दोऊ बरन ॥८६॥

मातृहा पितृहा गोघ्नो ब्रह्महाऽऽचार्यहामुने ।
श्वादः पुल्कसको वाऽपि शुद्धेरन् रामनामतः ॥८७॥

माता पिता गौ ब्राह्मन गुरु आदि जो श्रेष्ठ हैं, तिनको मारने वाला महाचांडाल नीच पापी सो भी श्रीरामनाम के उच्चारन से कृतार्थ हो जाते हैं, परम शुद्ध पदको पावते हैं ॥८७॥

सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं सर्वसिद्धान्तपारगम् ।
सर्वदेवाधिपं भद्रं सर्वसंपत्तिकारकम् ॥८८॥

सकल मंगलन को महा मंगलप्रद परम सिद्धान्तन को सिद्धान्त समस्त भ्रान्तहारी, सबसे श्रेष्ठ, सकल देवता ईश्वरन के स्वामी, कल्यानदायक, सकल सम्पत्तिसार, विधायक रघुनायक स्वरूप श्रीरामनाम महाअनूप है। बड़े विज्ञ शिरोमनि श्रीराम-नाम रहस्य को जानते हैं। सामान्य जीव कलिकाल विगोये श्रीमहाराज नामके महत्त्व को नहीं जानते हैं, भ्रम सिन्धु में गोता खाते हैं ॥८८॥

महानादस्य जनकं महामोक्षस्यहेतुकम् ।
महाप्रेमरसेशानं महामोदमयं परम् ॥८९॥

दश प्रकार का नाद योग ग्रन्थ में निरूपन है तिससे परे महानाद परमधाम से प्रगट होता है, सो महानाद श्रीरामनामो-च्चारन से प्राप्त होत है। महामोक्ष कैवल्य ते परे श्रीसीताराम परात्पर धाम प्राप्ति समेत समीप सेवा सुख, महा प्रेम महारस अखण्ड श्रीयुगलबिहार विलास, महामोद युगल छवि साक्षात् अवलोकन, इह सब श्रीरामनाम जप से प्राप्त हो जाता है, जपना चाहिये ॥८९॥

आह्लादकानां सर्वेषां रामनाम परात्परम् ।

परं ब्रह्म परं धाम परं कारणकारणम् ॥९०॥

सब हर्ष देनेहारन में श्रीरामनाम महाश्रेष्ठ हैं, परमब्रह्म सबके कारन हैं ॥९०॥

गणेशपुराणे श्रीगणेशवाक्यं ऋषीन् प्रति

रामनाम परं ध्येयं ज्ञेयं पेयमहर्निशम् ।
सर्वदा सद्भिरित्युक्तं पूर्वं मां जगदीश्वरैः ॥९१॥

गनेशपुरान में श्रीगनपति जू का वचन सब मुनिन से है—श्रीरामनाम परमधाम ध्यान करिबे योग्य पान करिबे योग्य, है इह बात ब्रह्मा, विष्नु, शिव जगत् के ईश्वर हमको पूर्व ही उपदेश किये हैं ॥९१॥

अहं पूज्योऽभवंल्लोके श्रीमन्नामानुकीर्त्तनात् ।
अतः श्रीरामनाम्नस्तु कीर्त्तनं सर्वदोचितम् ॥९२॥

श्रीरामनाम में विश्वास करिके हम सब लोकन में पूजनीय हो गये, ताते श्रीरामनाम जपो। श्रीपार्वती सम्बन्धी फल तथा विप्रशाप मोचन हारे सर्वेश्वर सर्वव्यापक नाम में विश्वास श्रीगनेश जू का भया ॥९२॥

विघ्नानां सन्निहन्तारं दातारं सर्वसम्पदाम् ।
सुधासारं सदा स्वच्छं निर्विकारं निराश्रयम ॥९३॥

श्रीरामनाम सब विघ्नन के नाशक सकल सम्पत्तिदायक, सुधासार, उज्जवल, सकल विकार रहित, निराश्रय हैं सर्वोपरि हैं, सत्य जानना ॥९३॥

नन्दीपुराणे नन्दीश्वर वाक्य गणान् प्रति

सर्वदा सर्वकालेषु ये न कुर्वन्ति पातकम् ।
रामनामजपं कृत्वा यान्ति धाम सनातनम् ॥९४॥

नन्दीपुरान में नन्दीश्वर श्रीशंकर प्रिय महाशैव शिरोमनि का वचन समस्त गनन प्रति है—सदा सर्वकाल में जो पाप करते कोई समय शावकाश सुकृत करने का नहीं पावते सो भी श्रीरामनाम महामंगल धाम जप करिके सनातन धाम श्रीअयोध्या मन बानी से परे तहां जाते हैं ॥६४॥

हरन् ब्राह्मणसर्वस्वं प्रपन्नघ्नं सुरां पिवन् ।
अपि भ्रूणं हनन् पूतो जायते नामकीर्त्तनात् ॥६५॥

ब्राह्मन का सब कुछ जो हरन कर लिया होय औ शरनागत का घात किया होय औ महा मद्यपान किया होय औ गर्भ गिरवाया होय इत्यादिक महापाप समूह किये होय सो भी श्रीरामनामोच्चारन से शीघ्र कृतार्थ हो जाता है ॥६५॥

शृणुध्वं भो गणास्सर्वे रामनाम परं बलम् ।
यत्प्रसादान्महादेवो हालाहलमपीपिवत ॥६६॥

हे समस्त गनों ! तुम श्रीरामनाम का परम बल श्रवन करो जौन श्रीरामनाम के प्रभाव से श्री महादेव हमारे स्वामी महाहलाहल सुधासम पान करि लियो ॥६६॥

जानाति रामनाम्नस्तु परत्वं गिरजापतिः ।
ततोऽन्यो न विजानाति सत्यं सत्यं वचो मम॥६७॥

श्रीरामनाम का परम परत्व महत्त्व गुन प्रताप श्रीपार्वतीपति भली भांति जानते हैं । तिनके बिना यथार्थ दूसरो कौन जाननवारो है, सत्य सत्य हमारा वचन है, श्रीरामनाम जपो सब मतवाद विषादमय त्यागि के ॥६७॥

इतिहासोत्तमे

श्रीरामकीर्त्तने नित्यं यस्य पुंसो न जायते ।

सलोमपुलकं गात्रं स भवेत्कुलिशोपमः ॥६८॥

इतिहासोत्तम ग्रन्थ में लिखा है—श्रीरामनाम संकीर्त्तन स्मरन समय जिस जापक को अश्रुपात पुलकावली गद्गद् वचन न हो जाय सो वज्र सम महाकठोर हृदय वाला है। बारम्बार उसको ग्लानि किया चाहिये के ऐसे शिरोमनि नाम कौ जपिके हाय हमारी दशा प्रेम निशावाली न भई, वृथा जन्म हमारा है ॥६८॥

रामनामजपे येषांमश्रुपातो भवेन्नहि ।
त एव खरतुल्यास्तु ह्यपूताः पातकालयाः ॥९९॥

श्रीरामनाम जप श्रवन पठन करते हुये जिनको अश्रुपात नहीं होता है सो गरदभ सम है, महा अपावन है प्राचीन पाप उनको घेर रहा है ॥६६॥

श्रुत्वा श्रीरामनाम्स्तु वैभवं पारमार्थिकम् ।
श्रवते न जलं नेत्रात्तन्नेत्रे वै रजोत्क्षिपेत् ॥१००॥

श्रीरामनाम का ऐश्वर्य्य यथार्थ सर्वोपरि सुनिके जिनके नेत्र से जल नहीं गिरता है. तिन नैनन में धूरि डारनो उचित है श्रीरामनाम सनेहिन को ॥१००॥

अहमप्यत्र नामानि कीर्त्तयामि जगत्पतेः ।
तानि वः श्रेयसे नित्यं भविष्यन्ति न संशयः ॥१०१॥

उसी स्थल में श्रीपुष्कल मुनि का वचन नरकवासियों से है—सन्त सम कौन दूजो दयाल होयगो। देखो आप महामलीन नरक में जायके जीवों का उद्धार करते हैं। तुम सब खेद न करो हम तुम्हारे सुख के निमित्त श्रीरामनाम जप करते हैं जिस द्वारा तुम्हारा परमकल्यान होयगा ॥१०१॥

अहो सतां संगममद्भुतंफलं परं पवित्रं नरकादिनाशनम्।
कर्त्तव्यमेतद्धि सदैव सज्जनैः
श्रीरामनाम्नि प्रभवेत्पराऽरतिः ॥१०२॥

सन्तों के संग का परम पवित्र फल सब नरकादिकन दुखों का नाशक है. ताते सर्वदा सज्जन को कर्त्तव्य है संग ही से नाम में प्रीति उत्पत्ति होती है ॥१०२॥

तवैवं नारकान्प्रति पुष्कर वाक्यं

सकृत्संकीर्तितो देवः स्मृतो वा मुक्तिदो नृणाम्।
स्मरतामहर्निशं नाम न जाने किं फलं भवेत् ॥१०३॥

एक बार मोक्षदाता श्रीरामनाम का संकीर्त्तन करे तो कृतार्थ होयगो। दिन रात्रि करते हैं तिनका फल हम नहीं जानते के क्या होयगा ॥१०३॥

कृतज्ञानां शिरोरत्नं रामनामपरात्परम्।
कथं न द्रवते श्रुत्वा स्वनामाह्वानमुत्तमम ॥१०४॥

सब कृतज्ञन के शिरोमनि श्रीरामनाम है काहे न तुम सबन का पुकार सुनिके रीझेंगे, तुम जप करो ॥१०४॥

किमत्र हाहाकारेण युष्माकमधुनाध्रुवम्।
स्मरध्वं रामनामाख्यं मन्त्रं दुःखापहारकम् ॥१०५॥

तुम नाना प्रकार से हाहाकार काहे को करते हो रामनाम सब दुःखन के हरनहारे हैं। महामन्त्र है, तुम सबके नरक ताप को विनाश करि डारते हैं ॥१०५॥

कालं करालमत्यन्तं दृष्ट्वा स्वप्नमिदं जगत्।
रामनामजपाच्छिप्रं जागृतिं याति निश्चतम् ।१०६

कालको महातीक्ष्ण विचारि के औ जगत् को स्वप्नसम

मानिके श्रीरामनाम जप करो। यथार्थ जागृत अवस्था को प्राप्त होवोगे निश्चय जानो ॥१०६॥

रामनाम्निसुधाधाम्नि कुतर्कं निरयावहम्।
समाश्रयन्ति ये पापास्ते महाराक्षसाधमाः ॥१०७

श्रीरामनाम महाअमृत धाम में जो तर्क मलीन मति से करते हैं सो महानीच अधमाधम हैं, राक्षस से भी बुरे हैं।१०७

प्रभाकरस्य संकाशं सर्वलोकैकगोचरम्।
उलूका नेत्रहीनाश्च नैव पश्यन्ति दुर्भगाः ॥१०८

सूर्य्य का प्रकाश सकल लोकन में प्रगट है जो उल्लू औ नेत्रहीन सूर्य्य को नहीं देखते अपने अभाग से तौ क्या सूर्य्य नहीं है? ऐसे ही जौन नीच कुपंथी श्रीरामनाम में परात्पर मति नहीं करते तौ क्या कमती हो जायगी ॥१०८॥

तत्रैव श्रीभृगुवाक्यम्

श्रुत्वा नामानि तत्रस्थास्तेनोक्तानि तथा द्विज।
नारका नराकान्मुक्ताः सद्य एव महामुने ॥१०९

उसी ठौर में श्रीभृगुमुनि का वचन है—नरक में रहने वाले या भांति से श्रीरामनाम माहात्म्य ब्राह्मण शिरोमनि के मुख से सुनि नरकन के दुःख से छूटिके शीघ्र कृतार्थ हो गये, हे मुने! काहू प्रति सम्बोधन है ॥१०९॥

श्वादोऽपि न हि शक्नोतिकर्त्तुं पापानि यत्नतः।
तावन्ति यावती शक्तिः रामनाम्नो शुभक्षये॥११०

चाण्डाल महानीच भी इतना पाप नहीं कर सकता है जितना पाप श्रीरामनाम उच्चारन कीर्तन से नाश हो जाता है श्रीरामनाम का बड़ा प्रताप है जानि के पाप करना विवेकी को अनुचित है, अपराध है औ सामान्य मनुष्यन को नहीं। किसही

रीति से श्रीरामनाम उच्चारन करे कृतार्थ हो जायेंगे पाप की शक्ति थोरी, श्रीरामनाम की अनन्त शक्ति है ॥११०॥

स्वप्नेऽपि नामस्मृतिरादिपुंसः
क्षयंकरोत्याहित पापराशिः ।
प्रयत्नतः किं पुनरादिपुंसः
संकीर्त्यते नाम रघूत्तमस्य ॥१११

आदि पुरुष श्रीरामनाम को जौन जीव स्वप्न में भी उच्चारन करता है तिसके भी सब पाप शान्ति हो जाते हैं औ जौन सनेह सहित कहे तिनकी कथा अकथ है ॥१११॥

इदमेव परंभाग्यं प्रशस्यं सद्भिरुत्तमैः ।
श्रीसीतारामनाम्नस्तु सततं कीर्त्तनं मुने ॥११२॥

परम भाग्य सन्त सज्जन यही कथन करते हैं के श्रीसीतारामनाम सर्वदा सनेह सहित उच्चारन होय, इस बिना सब अभाग्य है ॥११२॥

चातुर्यं सर्वथा विप्र इदमेव विनिश्चितम् ।
नामव्याहरणं नित्यं त्यक्त्वा दुर्वासनादिकम् ॥ ११३

परम चतुरता पण्डितपना हे विप्र ! निश्चय जानो ये ही है के सब दुर्वासना को त्यागि के निरन्तर नामोच्चारन होय और चतुराई वेश्यापन की है ॥११३॥

पुरा महर्षयः सर्वे रामनामानुकीर्त्तनात् ।
सिद्धा ब्रह्मसुखेमग्ना याताः श्रीरामसद्मनि ॥११४॥

पूर्व काल में भी बड़े २ ऋषि मुनि श्रीरामनाम कीर्त्तन प्रताप ते सिद्धपद पाय ब्रह्मानन्द में मगन होय के श्रीरामधाम गये श्रम बिना ॥११४॥

श्रुतं संकीर्त्तितं वाऽपि रामनामाखिलेष्टदम् ।
दहत्येनांसिसर्वाणि प्रसंगात्किमु भक्तितः ॥११५॥

श्रीरामनाम सकल सुखप्रद हैं, जौन जन श्रवन स्मरन कीर्त्तन काहू सम्बन्ध से करत हैं ताके सब पाप नाश करि डारते हैं, जो भक्ति समेत कहे उसकी कहा कहिये ॥११५॥

तत्रैव स्थानान्तरे परमपुरुष वाक्यं वैष्णवान्प्रति

मद्भक्ताः सत्यमेतत्तु वाक्यं शृणुताधुना ।
सकृदुच्चार्य्य मन्नाम मत्तुल्यो जायते नरः ॥११६॥

उसी ग्रन्थ में और ठौर श्रीपरम पुरुष का वचन सन्तन प्रति है—हे मेरे भक्त ! सब मेरे वचन को सत्य मानना विचारि समेत एक बार मेरा नाम जो उच्चारन करता है सो मेरे सम हो जाता है। इसमें अभिप्राय इह है के श्रीनाम जापक मात्र से सनेह करना उचित है ॥११६॥

रामनाम समं नाम न भूतो न भविष्यति ।
तस्मात्तदेव संकीर्त्य मुच्यते कर्मबन्धनात् ॥११७॥

श्रीरामनाम के सम और नाम तीनों काल में नहीं है, ताते श्रीरामनाम उच्चारन किये सब कर्म बन्धन छूटि जाता है॥११७॥

लघुभागवते श्रीव्यास वाक्यमे

गोबधः स्त्रीबधः स्तेयं पापं ब्रह्मबधादिकम् ।
श्रीरामकीर्त्तनादेव शतधा यातिसत्वरम् ॥११८॥

लघुभागवत में श्रीव्यासजी का वचन है—वामावध, ब्राह्मण बध, सोनादिकन का चुरावना इत्यादिक महापाप है सो श्रीरामनाम के जपे से सैकड़ों खण्ड होय के शीघ्र नाश हो जाते हैं ॥ ११८ ॥

किं तात वेदागम शास्त्रविस्तरै-
स्तीर्थादिकैरन्यकृतैः प्रयोजनम्
यद्यात्मनो वाञ्छसि मुक्तिकारणं
श्रीरामरामेति निरन्तरं रट ।११६॥

नाना प्रकार के शास्त्र विवादमय पढ़ने से, नाना वेद संहिता पुरान पाठ से तथा अनन्त तीर्थन के करने से कहा प्रयोजन है। जो अपने आत्मा का भला चाहते हो भली भांति से तो सब त्यागि स्पष्ट श्रीरामनाम सुखधाम उच्चारन करो, सर्वदा प्रेम बढ़ाय के ॥११६॥

वर्त्तमानं च यत्पापं यद्भूतं यद्भविष्यति ।
तत्सर्वं निर्दहेत्यासु रामनामानुकीर्त्तनात् ॥१२०॥

भूत, भविष्य, वर्तमान के किये हुये जितने पाप हैं, कर्म हैं, सो सब शीघ्र ही श्रीरामनाम जप कीर्तन प्रताप से नाश हो जायँगे श्रीरामनाम प्रभाव से ॥१२०॥

ते कृतार्थाः मनुष्येषु सुभाग्या नृप निश्चितम् ।
रामनाम सदाभक्त्या स्मरन्ति स्मारयन्ति ये॥१२१

सो मनुष्यन में श्रेष्ठ कृतार्थ रूप सकल पूजनीय हैं जो कलियुग में श्रीरामनाम जपते हैं और आन जीवन से जपवावते हैं, सो धन्य हैं ॥१२१॥

अभक्ष्यभक्षणात्पापमगम्यगमनाच्च यत् ।
तत्सर्वं विलयं याति सकृद्रामेतिकीर्त्तनात् ॥१२२

जो वस्तु वेद में निषिद्ध कहा है तथा जौन नारी का भोग करना शास्त्र में मना किया है सो सब नीचाचरण करता रहे औ श्रीरामनाम जप करे काहू भांति, एकबार भी तौन कृतार्थ

हो जाता है । प्रथम किया पाप तथा वर्त्तमान वाला पाप दोनों नाश हो जाते हैं नाम जपे जाय ॥१२२॥

सदा द्रोह परो यस्तु सज्जनानां महीतले ।
जायते पावनो धन्यो रामनाम वदन् सदा ॥१२३॥

भले लोगों का जो भूमि में द्रोह करता होय, सो भी श्रीरामनाम शरन से पावन हो जाता है श्रीरामनाम का अकथ प्रभाव है ॥१२३॥

श्रीरामेति मुदायुक्तः कीर्त्तयेद्यस्त्वनन्य धीः ।
पावनेन च धन्येन तेनेयं पृथिवी धृता ॥१२४॥

श्रीरामनाम सर्वदा सनेह आनन्द समेत अनन्यता धारिके जो जपते हैं, सो परम पावन से पावन हैं । तिसही महात्मा ने सम्पूर्ण पृथ्वी अपने तेज शक्ति से धारन किया है संशय रहित जानना ॥१२४॥

प्रभासपुराणे

मधुरालयमदो मुख्यं नाम सर्वेश्वरम् ।
रसनायां स्फुरत्याशु महारासरसालयम् ॥१२५॥

प्रभास पुरान में भी कहा है, किसी मुनीश्वर का वचन है-श्रीरामनाम महामधुरता के धाम हैं, मुख्य हैं, सब ईश्वरन के ईश्वर हैं । औ अपनी कृपालुता से रसना में स्फुरन होते हैं। महा रास रसके सुस्थान हैं ॥१२५॥

तत्रैव श्रीभगवद्वाक्यं नारदं प्रति

नाम्नां मुख्यतमं नाम श्रीरामाख्यं परन्तप ।
प्रायश्चित्तमशेषाणां पापानां मोचकं परम् ॥१२६॥

उसी स्थान में श्रीभगवान का वचन है—समस्त परमेश्वर

नामन में महामुख्य शिरोमनि सर्व उपास्य श्रीरामनाम है, अनन्त पाप का मुख्य शोधक मोचक है ॥१२६॥

श्रीरामनाम परमं प्राणात्प्रियतरं मम ।
न हि तस्मात् प्रियः कश्चित सत्यं जानीहि नारद १२७

श्रीरामनाम सर्वोपरि मेरे प्रानन से प्रिय हैं, इनसे परे और कोई हमको प्रिय नहीं है, हे श्रीनारद जी ! सत्य जानना देखो सब ईश्वर श्रीरामनाम के उपासक हैं ॥१२७॥

नराणां क्षीणपापानां सर्वेषां सुकृतात्मनाम् ।
इदमेव परं ध्येयं नान्यत्स्वप्नेऽपि नारद ॥१२८॥

जिन जीवों के समस्त पाप क्षय हो गये हैं परम सुकृती हैं तिन सबको श्रीरामनाम परम ध्येय ज्ञेय हैं, और साधन में चित्त उनका नहीं लगता है ॥१२८॥

कालिका पुराणे

रामेत्यभिहिते देवे परात्मनि निरामये ।
असंख्य मखतीर्थानां फलं तेषां भवेद्ध्रुवम् ॥१२९॥

कालिका पुरान में भी कालिका देवी का वचन है—श्रीरामनाम परमात्मा, प्रकाशमय, निरामय जो उच्चारन करते हैं तिनको असंख्य यज्ञ, तीर्थ, तपादि सुकृतन का फल निश्चय प्राप्त होता है ॥१२९॥

रामनाम प्रभा दिव्या सर्ववेदान्त पारगा ।
वदन्तिनियतं राजन् ज्ञात्वा सर्वोत्तमोत्तमाः ॥१३०॥

श्रीरामनाम की प्रभा महादिव्य अप्राकृत सब वेदांत से पार है। हे राजन् ! बड़े २ श्रेष्ठ महातमा निश्चय करिके कहते हैं ॥१३०॥

सर्वासामेव शक्तीनां कारणं तमसः परम् ।
श्रीरामनाम सर्वेशं सौख्यदं शरणार्थिनाम् ॥१३१॥

सकल शक्तिन को कारन सकल उपाधि तम से रहित श्रीरामनाम सकल प्रकार सुखदायक शरनागतन के है ॥१३१॥

प्राणानां प्राणमित्याहुर्जीवानां जीवनं परम् ।
मन्त्राणां परमं मन्त्रं रामनाम सदा प्रियम् ॥१३२॥

श्रीरामनाम प्रानन के प्रान, जीवन के जीव, महामन्त्रन के शिरोमनि हैं, एकरस अविनाशी हैं ॥१३२॥

देवीभागवते व्यास वाक्यं शुकं प्रति

जीवानां दुष्टभावानां कृतघ्नानां तथा शुक ।
चरितं शृणु भो तात सदा पाप रतात्मनाम् ॥१३३॥

देवी भागवत में श्रीव्यासदेव का वचन शुकदेव जी से है–जीव जो दुष्ट स्वभाव वाले, कृतघ्नी, सदा पापरत हैं, तिनकी कथा तुम सुनो ॥१३३॥

श्रीमद्रामेतिनाम्नस्तु प्रभावं वै परात्परम् ।
ज्ञान वैराग्यहीनानां हृदयं नैव भवेत् कदा ॥१३४॥

श्रीरामनाम का प्रभाव सर्वोपरि सर्वेश बन्दित तिनको यथार्थ नहीं जानते हैं । जाते ज्ञान वैराग्य सतसंग से हीन हैं, तिनको श्रीरामनाम प्रभाव कौन भाँति से लक्षित होय ॥१३४॥

गर्भमध्ये तु यत्प्रोक्तं करुणानिधिमग्रतः ।
सततं कीर्त्तनं रामनाम कुर्वे समादरात् ॥१३५॥

गर्भ के बीच जब महाकष्ट याने पायो, तब हाय हाय करके पुकार कियौ तब सातवें-आठवें महीने श्रीप्रभु ने याको बहुत जन्मन को बोध दियो, ताको पायकै याने श्रीराम करुणा

सागर के सामने कौल कियो के इस बेर श्रीमहाराज दयासागर हमको इह महानरककुण्ड से काढ़िये, अब हम बाहर आयके दिन रात सब काज छोड़िके आपका नाम मन लगाय के हिंसादि महादोषन से रहित होयके जपेंगे ॥१३५॥

त्यक्त्वा दुराग्रहं सर्वं कुटुम्बादिक संग्रहम् ।
करिष्यामि सदा भक्त्या तव नामानुकीर्त्तनम् ॥१३६॥

समस्त मतन का दुराग्रह तथा कुटुम्बादिक संग्रह त्यागि के प्रभो ! सर्वदा सनेह सहित आपके नाम गुन का कीर्त्तन स्मरन करैंगे साँच कहत हौं, श्रीमहाराज के सामने ॥१३६॥

तत्सर्वं विस्मृतं ताताधमेनात्मापहारिणा ।
तस्मात्कष्टतरं दुःखं स प्राप्नोति पुनः पुनः ॥१३७॥

सो सब आत्महन, कृतघ्नी, अधम ने विस्मरन करि दिया विषय सुख में लीन होयके, ताते बारम्बार नाना प्रकार का कष्ट चौरासी लाख योनि तथा नरकन में पावता है हे प्रिय ! ॥१३७॥

क्रियायोगसारे

स्मरणे रामनाम्नस्तु न काल नियमः स्मृतः ।
भ्रमादुच्चार्यमाणोऽपि सर्वदुःख विनाशनः ॥१३८॥

क्रियायोगसार में कहा है के श्रीरामनाम स्मरन संकीर्त्तन में कालादिकन का नियम नहीं, सर्व समय सुख दायक है। भ्रमते असावधानता ते जो उच्चारन करता है तिसका भी सब पीड़ा नाश करि देते हैं ॥१३८॥

नाम प्रभावं ब्रह्मर्षे रामचन्द्रस्य शाश्वतम् ।
ब्रवीम्यहं समासेन सेतिहासं निशामय ॥१३९॥

श्रीरामनाम को प्रभाव है हे मुने ! सर्वोपरि श्रेष्ठ है सो साव-

धान होय के सुनो—श्रीरामचन्द्र का रूप अखण्ड एक रस है इतिहास गणिका का इह है के पूर्व कोई सतयुग में एक रघु नाम वैश्य था। तिसकी पुत्री सुन्दरी थी, महासुन्दर, सो बिवाह के पीछे विधवा भई और कुछ दिनमें व्यभिचार में तत्पर भई। तब ससुरार से माता-पिता के घर में आई। वहां भी नीचाचरन करने लगी तब पिता के कोप संबन्ध से किसी शहर में जाय के गणिका होत भई ॥१३६॥

रामेति सततं नाम पठ्यते सुन्दराक्षरम् ।
रामनाम परंब्रह्म सर्ववेदाधिकं महत् ॥१४०॥

एक दिन सुवा वाने मोल लियो। कोऊ संत के कहे राम-नाम सर्व बेदन से अधिक सुवा समेत पढ़ने लगी ॥१४०॥

समस्त पातकध्वंसि स शुकस्तत्तदाऽपठत् ।
नामोच्चारणमात्रेण तयोश्च शुकबेश्ययोः ॥१४१॥

समस्त पाप नाशक श्रीराम के प्रभाव से दोउन के पाप विनष्ट हो गये ॥१४१॥

विनष्टमभवत्पापं सर्वमेव सु दारुणम् ।
रामनाम प्रभावेण तौ गतौ धाम्निसत्वरम् ॥१४२॥

समय पाय के साथ ही शरीर छूट्यो दोऊ शीघ्र ही परमधाम गये ॥१४२॥

ईदृशं रामनामेदं जपस्व द्विज सत्तम ।
अनायासेन तेऽभीष्टं सर्वं सेत्स्यति नान्यतः ॥१४३॥

ऐसे श्रीरामनाम को हे द्विज श्रेष्ठ! सर्वदा जप करो, श्रम बिना तुम्हारा सब मनोरथ सिद्ध हो जायगा श्रीरामनाम जप प्रभाव से और भाँति सिद्धि होना दुर्ल्लभतम है ॥१४३॥

विष्णोर्नामानि विप्रेन्द्र सर्ववेदाधिकानि वै ।
तेषां मध्ये तु तत्वज्ञ रामनाम परं स्मृतम् ॥१४४॥

श्रीविष्णु सर्वेश के सब नाम वेदन से श्रेष्ठ हैं तिनमें श्रीरामनाम परम मुख्यतम है, तत्त्वज्ञ शिरोमनि कहते हैं ॥१४४॥

रामेत्यक्षर युग्मं हि सर्वमन्त्राधिकं द्विज ।
यदुच्चारणमात्रेण पापी याति पराङ्गतिम् ॥१४५॥

श्रीरामनाम दोऊ बरन सर्व मन्त्रन से श्रेष्ठ हैं जिनके उच्चारन मात्र से पापी परम गति पावते हैं ॥१४५॥

रामनाम प्रभावोऽयंसर्ववेदैः प्रपूजितम् ।
महेश एव जानाति नान्यो जानाति वै मुने ॥१४६॥

श्रीरामनाम को प्रभाव सकल श्रुति पूजित है, परन्तु सब कोई नहीं जान सकता है। केवल श्रीशङ्कर जू यथार्थ अपने मति के अनुसार प्रभु के जनाये जानते हैं। हे जैमिनि मुने।१४६

विष्णोर्नाम सहस्राणि पठनाद्यल्लभते फलम् ।
तत्फलं लभते मर्त्यो रामनाम स्मरन् सकृत् ॥१४७॥

विष्णु के हजारन नाम कोटिन नाम लिये जो फल होता है सो श्रीरामनाम एक बार के कहे से प्राप्त होत है ! यह भी कहना सामान्य है श्रीरामनाम अनूपम है ॥१४७॥

तत्रैव धर्मराज वाक्यं दूतान् प्रति

दूताः स्मरन्तौ तौ चापि रामनामाक्षरद्वयम् ।
तदा न मेदण्डनीयौ तयोः सीतापतिः प्रभुः ॥१४८॥

उसी ठौर श्रीधर्मराज का वचन दूतन प्रति है—जब यमदूत मारे कूटे श्रीधर्मराज के पास गये औ हाल कहि सुनाये के वेश्या शुक समेत परमधाम गई, हमको महा आश्चर्य है तब श्रीधर्मराज

बोले—हे दूतों! तिन दोउन श्रीरामनाम उच्चारन कियो, ताते मेरे दण्ड लायक नहीं उनके प्रभु श्रीसीतापति हैं॥१४८॥

संसारे नास्ति तत्पापं यद्रामस्मरणैरपि ।
न याति संक्षयं सद्यो दृढं शृणुत किङ्कराः ॥१४६॥

संसार में ऐसा पाप नहीं के श्रीरामनाम जपे नाश न हो जाय इस बात को तुम साँच मानो ॥१४६॥

ये मानवाः प्रतिदिनं रघुनन्दनस्य
नामानि घोरदुरितौघ विनाशकानि ।
भक्त्याऽर्चयन्ति विबुध प्रवरार्चितस्य
ते पापिनोऽपि हि भटा मम नैव दण्ड्याः ॥१५०॥

जौन जन बड़भागी श्रीरघुनन्दन भक्त चितचन्दन का नाम सकल पाप तापहारी निरन्तर उच्चारन करते हैं सो चाहे जैसे पापी होय हमारे दण्ड के लायक नहीं हैं। हे दूतों! तुम सत्य जानना। श्रीराम सब ईश्वरन करिके परम पूजित हैं ॥१५०॥

तस्माद्धि सर्व पुण्याढ्यो गणिका स शुकौ भटाः ।
पूजनीयो च तौ नित्यमस्माभिर्नात्र संशयः ॥१५१॥

ताते शुक समेत गणिका परम पुण्य करके युक्त है। हे दूतों! तुम भी सन्देह दूर करो ॥१५१॥

तावत्तिष्ठन्ति पापानि देहेषु देहिनां वर ।
रामरामेति यावद्वै न स्मरन्ति सुख प्रदम् ॥१५२॥

तीनों शरीर में तबहीं तक सब पाप हैं, जब तक परम-मोदप्रद श्रीरामनाम जप न कियो। हे देह धारियों में श्रेष्ठ मुनीश्वर! ॥१५२॥

श्राद्धे च तर्पणे चैव बलिदाने तथोत्सवे ।

यज्ञे दाने व्रते चैव देवताराधनेऽपि च ॥१५३॥

श्राद्ध, तर्पन, दान, पूजा यज्ञ, देवाराधन, उत्साह तथा सब शुभ कार्य ॥१५३॥

अन्येष्वपि च कार्येषु वैदिकेषु विचक्षणैः ।
स स्मरेद्यत्फलं प्रेप्सू रामनामेति भक्तितः ॥१५४॥

सकल वेदोदित शुभाचरन जो यथार्थ विघ्न रहित फलकी इच्छा होय तो सब शुभ कार्य्यन में श्रीराम महामंगल धाम का स्मरण करो संशय त्यागि के सनेह सहित ॥१५४॥

मृत्युकाले द्विजश्रेष्ठ रामरामेति यस्स्मरेत् ।
स पापात्माऽपि परमं मोक्षमाप्नोति मानवः ॥१५५

मरने समय राम राम राम जो उच्चारन करता है अथवा सुनता है, सो चाहे जैसा महापापी होय कृतार्थ होता है महा-मोक्ष पावता है श्रीरामनाम के प्रताप से ॥१५५॥

रामेति नाम यात्रायां ये स्मरन्ति मनीषिणः ।
सर्वसिद्धिर्भवेत्तेषां यात्रायां नात्रसंशयः ॥१५६॥

श्रीरामनाम यात्रा समय जो उच्चारण करते हैं तिन मति-मानन को सब सिद्धि यात्रा में हो जाती है, ज्योतिष स्वरोदया-दिकन की अपेक्षा नहीं है ॥१५६॥

राजद्वारे तथा दुर्गे विदेशे दस्यु संगमे ।
दुःस्वप्नदर्शने चैव ग्रहपीडासु वै मुने ॥१५७॥

राजद्वार, कोट, विदेश, चोरन के सनमुख, बुरे स्वप्न के देखन में, ग्रहन की पीड़ा में ॥१५७॥

अरण्ये प्रान्तरे वाऽपि श्मशाने च भयानके ।
रामनाम स्मरेत्तस्य विद्यन्ते नापदो द्विज ॥१५८॥

जङ्गल, मैदान, श्मशान, भयानक स्थानादिक में जो श्री-रामनाम उच्चारन करत हैं, तिसको भय का लेश प्राप्त नहीं होता है ॥१५८॥

औत्पातिके महाघोरे राजरोगादिके भये ।
रामनाम स्मरन् मर्त्यो लभते नाशुभं क्वचित् ॥१५९॥

महा उत्पात में, राजरोगादिक भय में, श्रीरामनाम उच्चारन करने वालन को अमङ्गल नहीं होता है ॥१५९॥

रामनाम द्विजश्रेष्ठ सर्वाशुभ निवारणम् ।
कामदं मोक्षदं चैव स्मर्तव्यं सततं बुधैः ॥१६०॥

श्रीरामनाम सकल अशुभन के हरनहारे हैं। सब कामना तथा परम मोक्ष के दायक हैं, विवेकिन को चाहिये सर्वदा सब त्यागि के श्रीरामनाम परायन हो जाय ॥१६०॥

रामनामेति विप्रर्षे यस्मिन्न स्मर्यते क्षणे ।
क्षणः स एव व्यर्थस्स्यात्सत्यमेव मयोच्यते ॥१६१॥

श्रीरामनाम महा मोदधाम जिस छन घड़ी में स्मरन नहीं होते सो सब काल दुकाल कराल अतीव व्यर्थ अनर्थ का कारण है, ताते सज्जनन को चाहिये के सब बात कथनी प्रपंच त्यागि के श्रीरामनाम रटन करे; याही में परम कुशल है ॥१६१॥

स्मरन्ति रामनामानि नावसीदन्ति मानवाः ।
सत्यं वदामि ते नित्यं महामङ्गल कारणम् ॥१६२॥

श्रीरामनाम के स्मरन करने वाले जन कबहूँ दुखी न होयँगे श्रीरामनाम महामङ्गल का कारन है ॥१६२॥

जन्मकोटि दुरित क्षयमिच्छु
स्सम्पदञ्च लभते भुवि मर्त्यः ।

रामनाम सततं यदि भक्त्या
मोक्षदायि मधुरं स्मरतु स्म ॥१६३॥

कोटिन जन्म का दुरित जो क्षय किया चाहे और परम सम्पति सुख को पावने की इच्छा होय तौ परम मोक्षप्रद श्री-रामनाम मधुर २ ध्वनि से उच्चारन करो सब सुलभ हो जायगो संशय बिना ॥१६३॥

अहो चरित्रं जीवानां दुष्टानां पापकर्मणाम् ।
रामेति मुक्तिदं नाम न स्मरन्ति नराधमाः ॥१६४॥

संसार रोग ग्रसित दुष्ट जीवन के चरित्र तो देखो महा-आश्चर्य है के श्रीरामनाम महामोक्षप्रद तिनका संकीर्त्तन नहीं करते हैं नाना साधनन में पचते हैं ॥१६४॥

अहर्निशं नाम परात्परेश्वरं
जपन्ति ये ते सुखदास्सदा शिवाः ।
तेषां पदस्पर्शरजोभिषेकात्
सदैवपूताः किल पापिनो द्विजाः ॥१६५॥

दिन रात जो श्रीरामनाम परात्पर सुख शान्ति शोभाप्रद में जप समेत तत्पर हैं सकल आशा त्यागि के, सो महात्मन में शिरोमनि है । तिनके चरनरेनु से जो स्नान करते हैं सो चाहे जैसा पापी होय कृतार्थ हो जाता है उसके कोऊ पाप रहि नहीं जाते, श्रीरामनाम भक्तन का बड़ा प्रताप महामङ्गल दायक है ॥१६५॥

सहस्रास्येन शेषोऽपि रामनाम स्मरत्यलम् ।
तत्प्रभावेण ब्रह्माण्डं धृत्वा क्लेशं बिना द्विजम् १६६

सहस्रमुख दो हजार रसनासे श्रीशेषजी श्रीरामनाम उच्चारन

करते हैं और श्रीनाम बल से सब पृथ्वी श्रम बिना सरसोंसम धारन किये हैं श्रीरामनाम का महाप्रताप है ॥१६६॥

वक्तुं श्रमो न चाल्पोऽपि श्रोतुमत्यन्त मोददम्।
तथापि रामनामेदं न स्मरन्ति दुराशयाः ॥१६७॥

श्रीरामनाम उच्चारन में श्रम नहीं, सुनते हुये महामधुर सुन्दर तौ भी मलीन मतिवाले सनेह समेत नहीं सुमिरन करते बड़ा आश्चर्य है ॥१६७॥

अत्यन्त दुःखलभ्योऽपि सुमुक्तिर्जन्म कोटिभिः।
लभ्यते रामनाम्नैव कर्मास्ति किमतः परम् ॥१६८॥

अत्यन्त दुःख से कोटिन जन्मन में प्राप्त होने वाली जो मुक्ति सो थोरे श्रम से श्रीरामनाम उच्चारन से हो जाती है। अब इसकेआगे श्रेष्ठकृत्य कौन है बिचारो तौ सावधान होयके॥१६८॥

रामनामामृतं स्वादु कथं वाचा वदामि ते।
स्मरणादेव ज्ञातव्यं सर्वदा बुध सत्तमैः ॥१६९॥

श्रीरामनाम सुधाधाम का परम स्वाद वचन से कहा नहीं जाता है। श्रीरामनाम रसिक पण्डित जप स्मरन द्वारे लक्षित करेंगे ॥१६९॥

सर्वं कृत्यं कृतं तेन येनोक्तं नाम मुक्तिदम्।
नातः परतरं वस्तु क्वचित संदृश्यते द्विज ॥१७०॥

तिन्होंने सब शुभाचरन किया, जिन्होंने महामोक्षप्रद श्रीरामनाम सनेह समेत संकीर्तन किया उन्होंने सब कुछ कर लिया श्रीरामनाम के परे और तत्त्व सिद्धांत नहीं है ॥१७०॥

यावच्छ्रीरामनाम्नस्तु सुप्रतापं हृदिस्थले।
नायाति सम्भ्रमन्तीह विमुखाः सर्वयोनिषु ॥१७१॥

जब तक श्रीरामनाम का प्रताप हृदय में विराजमान नहीं भया तबही तक जीव सब नाना योनिन में भ्रमते हैं ॥१७१॥

रामनाम जप तत्परो जनो यत्फलं लभतितन्निरूपणे।
याति नैव श्रमतोऽपि कदाचित्
शिव शिवा श्रुति शेष गणेशः ॥१७२॥

श्रीरामनाम जप में तत्पर जौन जन हैं तिनका फल कहने में समर्थ्य शिव, विष्णु, शेष, गणेशादिक नहीं ॥१७२॥

मानुषं जन्म सम्प्राप्य येनोक्तमक्षरद्वयम् ।
ते पिशाचास्तु चाण्डालास्सर्वं प्रेत प्रपूजिताः ॥१७३

मनुष्य जन्म पाइके जिसने श्रीरामनाम दो वरन का उच्चारन नहीं किया तौन महाचाण्डाल, पिशाच, भूतन से भी महानीच है ॥१७३॥

आदिपुराणे श्रीकृष्णवाक्यमअर्जुनं प्रति

रामनाम सदा ग्राही रामनाम प्रियः सदा ।
भक्तिस्तस्मै प्रदातव्या न च मुक्तिः कदाचन ॥१७४॥

आदि पुरान में श्रीकृष्ण जी का वचन अर्जुन से है— हे प्रिय ! जो रामनाम उच्चारन करते हैं तथा श्रीरामनाम जिनको प्रिय है तिनको भक्ति रसरूपा हम देते हैं, कैवल्य नीरस उनको नहीं देते हैं ॥१७४॥

गायन्ति रामनामानि वैष्णवाश्च युगे युगे ।
त्यक्त्वा च सर्वकर्माणि धर्माणि च कपिध्वज॥१७५

श्रीरामनाम को वैष्णव सब युग युग प्रति परत्व समेत गान करते हैं, हे अर्जुन ! कर्म धर्म की रुचि मेरे नामानुरागी सब त्याग कर देते हैं ॥१७५॥

रामनामैव नामैव रामनामैव केवलम्।
गतिस्तेषां गतिस्तेषां गतिस्तेषां सुनिश्चितम्॥१७६

जिनको बारबार सब प्रकार श्रीरामनाम ही का आधार है, तिनकी सुगति तीनों काल में सब भाँति बनी है निश्चय समेत संशय नहीं है ॥१७६॥

श्रद्धया हेलया नाम वदन्ति मनुजा भुवि ।
तेषां नास्ति भयं पार्थ रामनामप्रसादतः॥१७७॥

श्रद्धा से अथवा अनादर समेत जो जन श्रीरामनाम भूमि में लेते हैं सो कृतार्थ रूप हैं। श्रीरामनाम को प्रसन्नता से उनको किसी का भय नहीं है कबहूँ, कतहूँ ॥१७७॥

रामनाम रता यत्र गच्छन्ति प्रेम सम्प्लुताः ।
भक्तानामनुगच्छन्ति मुक्तयः स्तुतिभिस्सह॥१७८॥

श्रीरामनामानुरागी प्रेम रस भीने जहाँ जाते हैं तिनके पीछे पीछे पाँचहूँ मुक्ति स्तुति करती चली जाती हैं। १७८॥

मानवा ये सुधासारं रामनाम जपन्ति हि ।
ते धन्या मृत्यु संत्रास रहिता रामवल्लभाः॥१७९॥

जौन जन महासुधासागर श्रीरामनाम जपते हैं सो धन्य हैं। कदाचित मीचका भय नहीं होता है, सो श्रीरघुनाथ जी के परम प्यारे दुलारे हैं ॥१७९॥

नामैव परमा मुक्तिर्नामैव परमा गतिः ।
नामैव परमा शान्तिर्नामैव परमा मतिः ॥१८०॥

श्रीरामनाम ही परम मुक्ति, सुगति, शान्ति, परम मति हैं, नाम बिना सब व्यर्थ है ॥१८०॥

नामैव परमा भक्तिर्नामैव परमा धृतिः ।

नामैव परमा प्रीतिर्नामैव परमा स्मृतिः ॥१८१॥

श्रीरामनाम उच्चारन ही परम मुक्ति रसरूपिनी श्रीराम वश करनी है। श्रीरामनाम ही परम अनुराग स्मरन है ॥१८१॥

नामैव परमं पुण्यं नामैव परमं तपः ।
नामैव परमो धर्मो नामैव परमो गुरुः ॥१८२॥

श्रीरामनाम ही परम पुण्य, परम तप, परम गुरु है ॥१८२॥

नामैव परमं ज्ञानं नामैव चाखिलं जगत् ।
नामैव जीवनं जन्तोर्नामैव विपुलं धनम् ॥१८३॥

श्रीरामनाम ही परम ज्ञान तथा सब विश्वमय है, सबके जीवन परम श्रेष्ठ धन श्रीरामनाम ही है ॥१८३॥

नामैव जगतां सत्यं नामैव जगतां प्रियम् ।
नामैव जगतां ध्यानं नामैव जगतां परम् ॥१८४॥

श्रीरामनाम सब संसार में सत्य औ परम प्रिय है और सब झूठ शत्रुरूप है। श्रीरामनाम जगत् में ध्यान योग्य है, श्रीराम-नाम सब विश्वते परे है ॥१८४॥

नामैव शरणं जन्तोर्नामैव जगतां गुरुः ।
नामैव जगतां बीजं नामैव पावनं परम् ॥१८५॥

श्रीरामनाम सब जगत् के रक्षक परम गुरुरूप है। परम पावन सब सृष्टि के परम कारन श्रीरामनाम है ॥१८५॥

रामनाम रता ये च ते वै श्रीरामभावुकाः ।
तेषां संदर्शनादेव भवेद्भक्ति रसात्मिका ॥१८६॥

जौन बड़भागी रसरागी श्रीरामनाम में रत निरंतर हैं, तौन श्रीसीताराम जू के परम भावना सम्पन्न हैं, तिन महात्मन के

दर्शन में रसरूपा विशद विहारदायिनी भक्ति उत्पन्न हो जाती है ॥१८६॥

कामादि गुण संयुक्ता नाममात्रैक बान्धवाः ।
प्रीतिं कुर्वन्ति ते पार्थ न तथा जित षड् गुणाः ॥१८७॥

काम, कोह, लोभ, मोह, मद, दंभादिक अनन्त औगुन करिके युक्त हैं, परन्तु सब भाँति श्रीरामनाम को अपना स्वामी सहायक जानते हैं, श्रीनाम के अनन्य हैं सो श्रीराम परम पुरुष को वश कर लेते हैं औ नाम सनेह रहित कामादिक रहित के भी हम वश नहीं होते हैं ॥१८७॥

तं देशं पतितं मन्ये यत्र नास्ति सु वैष्णवः ।
रामनाम परो नित्यं परानन्द विवर्द्धनः ॥१८८॥

वह देश महानिन्दित है जहां श्रीरामनाम सनेही परम सुखदायक नहीं हैं ॥१८८॥

रामनाम रता जीवा न पतन्ति कदाचन ।
इन्द्राद्यास्मरूपतन्त्यन्ते तथा चान्येऽधिकारिणः ॥१८९॥

श्रीरामनाम सनेही कबहीं न गिरेंगे और सब देवता अधिकारी गिर पड़ेंगे ॥१८९।

राम स्मरण मात्रेण प्राणान्मुञ्चन्ति ये नराः ।
फलं तेषां न पश्यामि भजामि तांश्च पार्थिव ॥१९०॥

श्रीरामनाम स्मरन करते जिनका प्रान छूट जाता है तिनके फल को हम नहीं जानते हैं, परन्तु उनका सेवन हम करते हैं ॥१९०॥

नाम स्मरण मात्रेण नरो याति निरापदम् ।
ये स्मरन्ति सदा रामं तेषां ज्ञानेन किं फलम् ॥१९१॥

श्रीरामनाम स्मरन मात्र से दुख रहित पद को पावता है। जो श्रीरामनाम सदा कहते हैं, उनके फल को हम नहीं जानते हैं ॥१६१॥

नामैव जगतां बन्धुर्नामैव जगतां प्रभुः ।
नामैव जगतां जन्म नामैव सचराचरम् ॥१६२॥

श्रीरामनाम ही सबके स्वामी, सहायक, सबकेकर्त्ता हैं॥१६२

नामैव धार्यते विश्वं नामैव पाल्यते जगत् ।
नाम्नैव नीयते नाम नामैव भुञ्जते फलम् ॥१६३॥

श्रीरामनाम सब विश्व के आधार पालक हैं, श्रीरामनाम ही से नाम का स्वरूप जानि पड़ते हैं ॥१६३॥

नामैव गृह्यते नाम गोप्यं परतरात्परम् ।
नामैव कार्यते कर्म नामैव नीयते फलम् ॥१६४॥

श्रीरामनाम जपसे गोप्य नाम महत्व जानो जात है, सब काज फल नामाधीन है ॥१६४॥

नाम्नैव चाङ्गशास्त्राणां तात्पर्यार्थमुत्तमम् ।
नामैववेद सारांशं सिद्धान्तं सर्वदा शिवम्॥१९५॥

श्रीरामनाम ही सर्व शास्त्रन को उत्तम सिद्धान्त है औ श्रुतिन का सार सिद्धान्त महामंगलरूप है, इन बिना सब भ्रान्त है ॥१६५॥

नाम्नैव नीयते मेधा परे ब्रह्मणि निश्चला ।
नाम्नैव चञ्चलं चित्तं मनस्तस्मिन्प्रलीयते ॥१६६॥

श्रीरामनाम के द्वारे बुद्धि परब्रह्म में निश्चल हो जाती है। चंचल चित्त श्रीरामनाम बल से लय हो जाता है ॥१६६।

श्रीरामस्मरणेनैव नरो याति पराङ्गतिम् ।
सत्यं सत्यं सदा सत्यं न जाने नामजं फलम् ॥१६७

श्रीरामनाम स्मरन से नरमात्र परमपद जाता है सत्य सत्य हम कहते हैं। नाम का फल हम नहीं जानते हैं ॥१६७॥

रामनाम प्रभावोऽयं सर्वोत्तम उदाहृतः ।
समासेन तथा पार्थ वक्ष्येऽहं तव हेतवे ॥१६८॥

श्रीरामनाम का प्रभाव सर्वोपरि है, संक्षेप से सुनो हम कहते हैं ॥१६८॥

न नाम सदृशं ध्यानं न नाम सदृशो जपः ।
न नाम सदृशस्त्यागो न नाम सदृशी गतिः ॥१६६॥

श्रीरामनाम स्मरन सम ध्यान, जप, त्याग, गति कुछ नहीं है ॥१६६॥

न नाम सदृशं तीर्थं न नाम सदृशं तपः ।
न नाम सदृशं कर्म न नाम सदृशः शमः ॥२००॥

श्रीरामनाम सम तीर्थ, तप, शम, दम, योगादिक कोई नहीं ॥२००॥

न नाम सदृशी मुक्तिर्न नाम सदृशः प्रभुः ।
ये गृह्णन्ति सदा नाम त एव जित षड्गुणाः ॥२०१॥

श्रीरामनाम के सम मोक्ष तथा मोक्षदाता परमेश्वर भी नहीं है। परमेश्वर श्रीनाम के अधीन हैं नाम सर्वोपरि है। जो सदा नाम का ग्रहन करते हैं सोई छओ शत्रु के जीतने वाले हैं ॥२०१॥

कुर्वन् वा कारयन्वाऽपि रामनामजपँस्तथा ।

नीत्वा कुल सहस्राणि परंधामाभि गच्छति ॥२०२॥

जो श्रीरामनाम का जप करते हैं तथा औरों से करवाते हैं सो जन अपना तथा औरों का हजारों पीढ़ी परमधाम ले जाते हैं श्री रामनाम प्रताप से ॥२०२॥

नाम्नैव नीयते पुण्यं नाम्नैव नीयते तपः ।
नाम्नैव नीयते धर्मो जगदेतच्चराचरम् ॥२०३॥

श्रीरामनाम कृपा शक्ति से सब सुकृत, तप, धर्म, चराचर की पालना स्थित है ॥२०३॥

रामनाम प्रभावेण सर्व सिद्धेश्वरो भवेत् ।
विश्वासेनैव श्रीरामनाम जाप्यं सदा बुधैः ॥२०४॥

श्रीरामनाम के प्रभाव से सर्व सिद्धन का स्वामी हो जाता है, प्रीति प्रतीत पूर्वक सज्जनन को सदा नाम जपना चाहिए २०४

शान्तो दान्तः क्षमाशीलो रामनाम परायणः ।
असंख्य कुलजानां वैतारणे सर्वदा क्षमः ॥२०५॥

शांत उद्वेग रहित इन्द्र, मन को दमन करने हारे क्षमाशील. श्रीरामनाम तत्पर हैं सो असंख्य जन्मन के पापों को दूर कर के अनन्त कुल का उद्धार करते हैं परम समर्थ हैं ।२०५॥

ये नाम युक्ता विचरन्ति भूमौ
त्यक्त्वाऽर्थकामान्विषयांश्च भोगान् ।
तेषां च भक्तिः परमा च निष्ठा
सदैव शुद्धा सुभगा भवन्ति ॥२०६॥

अर्थ कामादिकन को त्यागि के जो जन नाम समेत भूमि में विचरते हैं विषय त्यागि के तिनको परम भक्ति, परम निष्ठा,

परम शुद्धता, सुन्दरता सब लाभ होत है संशय बिना ॥२०६॥

स्मरद्यो रामनामानि त्यक्त्वा कर्माणि चाखिलम्।
स पूतः सर्वपापेभ्यः पद्मपत्रमिवाम्भसा ॥२०७॥

श्रीरामनाम का स्मरन जो जन करते हैं, सर्व कर्मन का त्याग करके, सो पवित्र हो जाते हैं सर्व पापन ते, उनको स्पर्श नहीं कर सकता है, जैसे जल को कमल नहीं स्पर्श करता॥२०७॥

त्यक्त्वा श्रीरामनामानि कर्म कुर्वन्ति येऽधमाः ।
तेषां कर्माणि बन्धाय न सुखाय कदाचन ॥२०८॥

श्रीरामनाम को छोड़िके जो अधम, मूर्ख कर्म करते हैं तिन सबको कर्म नाना बन्धन देते हैं कभी सुखदायक उनको कर्म नहीं होता है ॥२०८॥

यस्य चेतसि श्रीराममहामाङ्गलिकं परम्।
स जित्वा सकलाँल्लोकान् परंधाम परिव्रजेत् ॥२०९॥

जिनके चित्त में श्रीरामनाम महामंगल धाम हैं सो सब सुकृत वालन के लोक को लांघि के श्रीसीताराम परात्पर धाम में जाते हैं ॥२०६॥

नाम युक्ता जना पार्थ जात्यन्तर समन्विताः ।
प्रीतिं कुर्वन्ति श्रीराम न तथा नष्ट षड्गुणाः ॥२१०॥

जौन जन श्रीरामनाम करिके युक्त हैं, श्रीरामनाम में तत्पर हैं सो यद्यपि महानीच जाति भी हैं तो भी श्रीरामनाम को प्रसन्न करि लेते हैं, बड़े श्रेष्ठ ब्राह्मण नाम हीन से, यद्यपि उह कामादिक रहित हैं ॥२१०॥

गायन्ति रामनामानि सततं ये जना भुवि।
नमस्तेभ्यो नमस्तेभ्यो नमस्तेभ्यः पुनः पुनः ॥२११॥

श्रीरामनाम को सदा भूमि में गान करते हैं तिनको मेरो बारम्बार प्रनाम है ऐसा परत्व श्रीरामनाम का है विचारो, अवतार सब बन्दना करते हैं ॥२११॥

रामनामाश्रया ये वै भावुकाः प्रेम संप्लुताः ।
ते कृतार्थास्सदा तात सत्यं सत्यं न चान्यथा २१२॥

श्रीरामनाम के आश्रित जो प्रेमी सज्जन भावुक हैं सो सदा कृतार्थ रूप हैं सत्य सत्य जानना ॥२१२॥

इति विज्ञापितं तात त्वया बुद्धया विधारय ।
रामनाम प्रसादेन सर्वं सुखमवाप्स्यसि ॥२१३॥

या रीति से श्रीरामनाम का महत्त्व हमने तुमसे कहा। हे प्रिय ! विचारि के धारन करो। श्रीरामनाम प्रसन्नता से सब सुख तुमको प्राप्त होयगा ॥२१३॥

तां नामगाथां विचरन्ति भूमौ
गीत्वा सदा ते पुरुषाः सुधन्याः ।
ये नामगाथा परतत्त्वनिष्ठाः
ते धन्य धन्या भुवि कृत्य पुण्याः ॥२१४॥

श्रीरामनाम गुन की कथा गाय के जो भूमि में विचरते हैं सो पुरुष धन्य हैं। श्रीरामनाम की कथा में जिनकी निष्ठा है सो कृतार्थरूप हैं ॥२१४॥

रामनाम जनासक्तो रामनाम जनप्रियः ।
स पूतो निर्विकल्पश्च सर्वपाप वहिर्मुखः ॥२१५॥

श्रीरामनामानुरागी पद में जो आसक्त हैं, श्रीरामनाम सनेही जिनको प्रिय हैं, सोई परम पवित्र है, सकल कल्पना से रहित हैं, सब पापन से पार हैं ॥२१५॥

रामनाम प्रसङ्गेन ये जपन्तीह चार्जुन ।
तेऽपि ध्वस्ताखिलाघौघा यान्ति रामास्पदं परम्॥२१६

श्रीरामनाम को सनेह बिना किसी लौकिक सम्बन्ध से भी जो जप करते हैं, हे प्रिय! सो भी सब पापन को नाश करिके सन्देह बिना परमधाम जाते हैं ॥२१६॥

घोषयेन्नाम निर्वाणं कारणं यस्त्वनन्य धीः ।
तस्य पुण्यफलं पार्थ वक्तुं कः शक्यते भुवि ॥२१७॥

जो श्रीरामनाम को अनन्य मति होय के घोषते हैं सो परम मोक्ष पावते हैं तिस विवेकी के सुकृत समूह को कोई भूमि में कहि नहीं सकता है ॥२१७॥

तस्मान्नामानि कौन्तेय भजस्व दृढ चेतसा ।
रामनाम समायुक्तास्ते मे प्रियतमास्सदा ॥२१८॥

ताते श्रीरामनाम दृढ़ चित्त होय के भजन करो। श्रीरामनाम जप समेत जौन जन हैं तौन हमारे महाप्रियतम हैं ॥२१८॥

सततं नाम गायन्ति निर्निर्विण्णेन चेतसा ।
तेषां मध्ये सदा वासः श्रीरामस्य विशेषतः ॥२१९॥

सदा वैराग्य सहित जो श्रीरामनाम का स्मरन करते हैं तिन अनुरागिनके मध्यमें श्रीरामचन्द्र का विशेष वास रहता है ॥२१६॥

श्रद्धया हेलया वाऽपि गायन्ति नाम मङ्गलम् ।
तेषां मध्ये परंनाम वसेन्नित्यं न संशयः ॥२२०॥

विश्वास अथवा अनादर समेत जो श्रीरामनाम महामंगल स्वरूप का गान करते है, तिनके मध्य में श्रीरामनाम एक रस बसते, प्रीति पेखिके क्रमसे, नहीं है ॥२२०।

न तत्र विस्मयः कार्यो भवता रामनाम्नि च ।

सत्यं वदामि ते पार्थ प्रियाय मम चात्मने ॥२२१॥

श्रीरामनाम प्रताप में हे प्रिय! तुम संशय कभी न करना हम सत्य सत्य तुमको अपना प्यारा मानिके गोप्य रहस्य कहा है, निश्चय समेत धारन करो ॥२२१॥

यन्नाम स्मरतो नित्यं महा ह्यज्ञान बन्धनम् ।
छिद्यते चाश्रमेणैव तमहं राघवं भजे ॥२२२॥

जिन श्रीराम के नाम को स्मरन करते करते थोरे दिन में महा अज्ञान रूप बन्धन कटि जाता है सो श्रीरामनाम का हम स्मरन करते हैं ॥२२२॥

श्रद्धया परमा युक्ता रामनाम परायणाः ।
करोति जानकीजानिस्तस्य चिन्तां पुनः पुनः ॥२२३॥

परम श्रद्धा समेत जो श्रीरामनाम पारायन हैं तिनकी चिन्ता श्रीसीतावर बारम्बार करते हैं कभी भूलते नहीं ॥२२३॥

अशेष पातकैर्युक्तः सर्वदोष परिप्लुतः ।
स पूतः सर्वपापेभ्यो यस्य नाम परन्तप ॥२२४॥

अनन्त पाप करिके युक्त सकल दोष में मगन हैं सो भी हे शत्रुतापन अर्जुन! श्रीरामनाम प्रताप से छूटि जाता है ॥२२४

रामनाम सदा प्रेम्णा संस्मरामि जगद्गुरुम् ।
क्षणं न विस्मृति याति सत्यं सत्यं वचो मम ॥२२५॥

सब विश्व के रूप श्रीरामनाम तिनका हम स्मरन करते हैं छनभर भूलते नहीं। मेरे वचनको मेरे मन से सत्य सत्य जानो २२५

पर निन्दा समायुक्तः परदार परायणः ।
स पूतः सर्वपापेभ्यो यस्य नाम परन्तप ॥२२६॥

पराई निन्दा, पराई नारी में जो तत्पर है सो सब पाप से छूटि जाते हैं हे प्रिय ! ॥२२६॥

पर हिंसा समायुक्तो लोभ मोह समाकुलः ।
सः पूतः सर्व पापेभ्यो यस्य नाम्नि सदा रुचिः ॥२२७॥

पराया घात जो करते हैं लोभ मोह में लीन हैं सो भी सब पाप से छूटि जाता है श्रीरामनाम की कृपा से ॥२२७॥

अशेष पातकैर्ग्रस्ताः स्वधर्म परिवर्जिताः ।
एते तरन्ति पापिष्ठा रामनाम प्रसादतः ॥२२८॥

सब पापन करिके पूर्ण अपने धर्म से रहित भी है सो भी महापापों से छूटि के कृतार्थ होते हैं श्रीरामनाम के प्रसाद से ॥२२८॥

तिष्ठन्ति रामनामानि तिष्ठन्ति वदनानि च।
तथापि नरके मूढाः पतन्तीत्यद्भुतं महत् ॥२२९॥

बड़ा आश्चर्य है विचार के देखो ! लोगों के पास मुख भी जीभ समेत तैयार है तौ महा मूढ़ मलीन श्रीरामनाम जप बिना नरकन में चले जाते हैं। श्रीरामनाम का जप नहीं करते आलस प्रमाद में समाय के ॥२२९॥

गायन्ति रामनामानि कर्म कुर्वन्ति चाखिलम् ।
स याति परमं स्थानं रामेण सह मोदते ॥२३०॥

श्रीरामनाम का जो उच्चारन करते हैं औ वेद कथित कर्म भी समस्त करते हैं सो सज्जन परात्पर धाम साकेत को जाते हैं औ श्रीराम के साथ एकरस विहार करते हैं ॥२३०॥

विसृज्य रामनामानि कर्म कुर्वन्ति चाखिलम् ।
किमाश्चर्यं किमाश्चर्यं किमाश्चर्यं धनञ्जय ॥२३१॥

श्रीरामनाम को छोड़िके जो नाना प्रकार के शुभाचरन

करते हैं सो महामूढ़ हैं, बड़ा आश्चर्य करते हैं हे प्रिय ! उनका श्रम व्यर्थ है ॥२३१॥

शान्तो दान्तः क्षमाशीलो रामनामार्थ चिन्तकः ।
तस्य सद्‌गुण संख्यानं वक्तुं नैव क्षमोऽप्यहम् ॥२३२॥

शान्त, दान्त, क्षमा सहित है, मन इन्द्रिन को रोके है औ श्रीरामनाम का अर्थ मनन करते हैं तिनके गुनकी संख्या हम कथन करने में समर्थ नहीं हैं । २३२॥

विसृज्य रामनामानि कर्म कुर्वन्ति ये नराः ।
अप्राप्य सद्‌गतिं पार्थ भ्रमित्वा कर्मवर्त्मसु ॥२३३॥

श्रीरामनाम को त्यागि के जौन जन कर्मकाण्ड में लगते हैं सो अनेक जन्म लौं कर्म मार्ग में भ्रमंगे, कभी विश्राम न पावेंगे, ताते श्रीरामनाम समेत शुभाचरन करने से परम फल का लाभ होता है ॥२३३॥

सर्वयोनिषु कौन्तेय भ्रमन्ति ते नराधमाः ।
विसज्य रामनामानि माया मोहित चेतसः ॥२३४॥

चौरासी लाख योनिन में सो नराधम महामलीन भ्रमते रहेंगे माया करिके. जिनका चित्त मोहित है जाते सब भाँति सुखदायक श्रीरामनाम को त्यागि किये हैं उनका उद्धार न न होएगा कबहीं ॥२३४॥

यदृच्छयापि श्रीरामनाम गृह्णन्ति सादरम् ।
स पूतः सर्वपापेभ्यो रामनाम प्रसादतः ॥२३५॥

सनेह बिना जो भी श्रीरामनाम उच्चारन करते हैं सादरसमेत रटते हैं सो पापन से छूटिके पवित्र हो जाते हैं श्रीरामनाम कृपा से ॥२३५॥

येनकेन प्रकारेण नाममात्रैक जल्पकाः ।
श्रमं विनैव गच्छन्ति परे धाम्नि समादरात् ॥२३६॥

चाहे जिस तरह से श्रीरामनाम अभिराम का उच्चारन करते हैं सो श्रम बिना सादर परमधाम में जाते हैं ॥२३६॥

नामयुक्ताञ्जनान् दृष्ट्वा यः पश्येत् सादरं सखे ।
स याति परमं स्थानं रामेण सह मोदते ॥२३७॥

श्रीनामानुरागिन को जो आदर प्रेम समेत दर्शन करते हैं सो भी परमधाम जाते हैं श्रीराम परम पुरुषोत्तम के साथ आनन्द पावते हैं ॥२३७॥

नामयुक्ताञ्जनान् दृष्ट्वा प्रणमन्ति च ये नराः ।
ते पूतास्सर्वपापेभ्यः कर्मणा तेन हेतुना ॥२३८॥

श्रीरामनाम रसिकन सन्तन को देखिके जो प्रीत समेत प्रनाम करते है सो सब भांति पवित्र हो जाते हैं प्रनाम सम्बन्धसे॥२३८॥

नामयुक्ताञ्जनान् दृष्ट्वा स्निग्धो भवति यो नरः ।
स याति परमं स्थानं परमानन्द सागरम् ॥२३९॥

श्रीरामनाम समेत सन्त को पेखिके जो सनेह सहित द्रवित चित्त होते हैं सो परमेश्वर धाम परमानन्द सागर में जाते हैं सन्देह बिना ॥२३९॥

गीत्वा च रामनामानि विचरेद्राम सन्निधौ ।
इदं ब्रवीमि ते सत्यं तस्य वश्यो जगत्पतिः ॥२४०॥

श्रीरामनाम गान उच्चारन करते जो श्रीराम के स्वरूप के समीप परिक्रमा करते हैं तिनके वश श्रीसीताराम सब विश्व के स्वामी हो जाते हैं ॥२४०॥

गीत्वा च रामनामानि ये रुदन्ति नरोत्तमम् ।

तेषां हरिः परिक्रीतो परमेशेन संयुतः ॥२४१॥

श्रीरामनाम सनेह समेत गान करते करते जौन बड़भागी रुदन करते हैं तिन महात्मन के हाथ हम तथा श्रीपरमपुरुष परब्रह्म श्रीरामचन्द्र जी बिकि जाते हैं, अभिप्राय उनके वश हो जाते हैं। इतने महत्व पर भी जो अभागी श्रीरामनाम से प्रीति न करें सो महामूढ़ हैं ॥२४१॥

गीत्वा च रामनामेति पतन्ति भुवि ये नराः ।
ते वै धन्यातिधन्याश्च वैष्णवानां शिरःमणिः॥२४२॥

श्रीरामनाम उच्चारन करते करते प्रेम सहित दम्भ रहित जो भूमि में गिरि पड़ते सो धन्य से धन्य वैष्णव के शिरोमनि हैं और तुम भी धन्य से धन्य वैष्णव शिरोमनि हो ॥२४२॥

यदृच्छया न गृह्णन्ति रामनामेति मङ्गलम् ।
अदृश्यास्ते जनाः पार्थ दृष्टिमात्रेण वर्जिताः॥२४३॥

काहू भांति से जो रामनाम ग्रहन नहीं करते हैं महा मंगलमय मानिके, तिन पापिन का मुख देखना महापाप है । जो कदाचित् आँख के आगे आ जायँ तो नेत्र बन्द करि लेना परम उचित है विमुखन के मुख देखने से, सम्भाषन से, स्पर्श से पाप ताप प्राप्त होता है, सावधान समेत रहना चाहिए ॥२४३॥

स्वप्नेऽपि रामनाम्नस्तु येषामुच्चारणं नहि ।
भाग्यहीनास्तु ते नीचाः पापिनामग्रगामिनः ॥२४४॥

जिन नीच जीवन को कोई संस्कार संग पाय के स्वप्न में भी पर वश बड़राय के श्रीरामनाम उच्चारन नहीं होता सो महा अभागी पापिन के राजा नीच कीच मीच ग्रसित हैं उनका समागम भूलि के करना असम्भव है, सर्वथा अनुचित है ।२४४॥

भिक्षया येन गृह्णन्ति रामनाम परेश्वरम् ।
लोकोपचारनिरतास्ते वै पाखण्डिनो ध्रुवम् ॥२४५॥

भीख लालच के सम्बन्ध से जो श्रीरामनाम परमेश्वर को नहीं जपते हैं सो महामूढ़ हैं लोकवासना में बँधे हैं, महापाखण्डी हैं, जाते पेट सम्बन्ध से इष्ट विमुख भये महामलीन हैं॥२४५॥

रामनाम जपाज्जीवा अनायासेन संसृतिम् ।
तरन्त्येव तरन्त्येव तरन्त्येव सुनिश्चितम् ॥२४६॥

श्रीरामनाम जप से समस्त जीव संसार सागर को तरि जायेंगे सन्देह बिना पार उतरेंगे, हम बारम्बार कहते हैं निश्चय करिके जानना मानना, श्रम बिना कृतार्थ होयँगे॥२४६॥

तत्रैवार्जुनवाक्यं श्रीकृष्णं प्रति

भवत्येव भवत्येव भवत्येव महामते ।
सर्वपाप परिव्याप्तास्तरन्ति नामबान्धवाः ॥२४७॥

उसी ठौर श्री अर्जुन का वचन श्रीकृष्णचन्द्र से है—जैसा आपने कहा है श्रीरामनाम परत्व वैसे ही है सब भाँति से बारम्बार। जो श्रीरामनाम के सम्बन्धी हैं सो चाहे जैसे पापन करिके युक्त हों कृतार्थ हो जायँगे ॥२४७॥

नमोऽस्तु नामरूपाय नमोऽस्तु नामजल्पिने ।
नमोऽस्तु नाम साध्याय वेदवेद्याय शाश्वते ॥२४८॥

श्रीरामनाम के परात्पर स्वरूप को मेरा नमस्कार है श्रीनाम जापकन को मेरा दंडवत् है, परम फलरूप श्रीरामनाम को मेरा नति है सकल वेदन करिके जानिबे योग्य श्रीरामनाम को मेरी दण्डवत है श्रीरामनाम सर्वेश्वर अविनाशी हैं तिनको नमोनमः है ॥२४८॥

नमोस्तु नामनित्याय नमो नाम प्रभाविने ।
नमोस्तु नामशुद्धाय नमो नाममयाय च ॥२४९॥

परम नित्य, महाप्रभाव संयुक्त, परम शुद्ध बुद्ध सच्चिदानन्द सर्व नाममत आमय रहित श्रीरामनाम को पुनि २ मेरी दण्डवत वन्दना है ॥२४९॥

श्रीरामनाम माहात्म्यं यः पठेच्छ्रद्धयान्वितः ।
स याति परमं स्थानं रामनाम प्रसादतः ॥२५०॥

श्रीरामनाम का माहात्म्य जो श्रद्धा समेत सुनते पढ़ते गुनते हैं सो सज्जन भी श्रीरामनाम प्रसाद से परमधाम जायँगे सही ॥२५०॥

रामनामार्थमुत्कृष्टं पवित्रं पावनं परम् ।
ये ध्यायन्ति सदास्नेहात्ते कृतार्थाः जगत्त्रये ॥२५१॥

श्रीरामनाम का उज्जवल गुन अर्थ परम श्रेष्ठ है, परम पवित्र है, सो सनेह समेत मनन करते हैं सो पुनीत होते हैं तीनों लोकों में कृतार्थ रूप हैं ॥२५१॥

शौर्य धर्मोत्तरे

श्रीमद्रामस्य नाम्नस्तु प्रभावं निर्मलं मुने ।
जपावेशवशेनैव ज्ञायते सज्जनैः क्वचित् ॥२५२॥

सौर्य्य धर्म्मोत्तर ग्रंथ में कहा है—श्रीमद्रामनाम का प्रभाव महानिर्मल एकरस है। हे मुने! बिना जपावेश के कोई जान नहीं सकता है। सज्जन बिरले जानते हैं ॥२५२॥

मनोरथप्रदातारं सज्जनानां परं प्रियम् ।
लौकिकी दुर्भगा व्रीडा हन्तारं नामसद्यशः ॥२५३॥

सज्जनन को परम मनोरथ दाता परमप्रिय श्रीरामनाम है। श्रीरामनाम का सुन्दर यश सब संसारी लाज महामलीन कुसाज को नाश करि डारते हैं ॥२५३॥

सुकृदुच्चरितः शब्दो रामनाम्ना विभूषितः ।
कुरुते नामवत्कार्यं सर्वं मोक्षावधिं नृणाम् ॥२५४॥

श्रीरामनाम समेत जो शब्द वानी होय सो नाम महाराज के सम मोक्षदायक है, सकल मनुष्यन का पूरक है ॥२५४॥

परत्वं परम नाम्नो विदितं सर्वतः श्रुतौ ।
अबुधाः नैव जानन्ति सम्पतन्ति भवार्णवे ॥२५५॥

सम्पूर्ण श्रुतिन में श्रीरामनाम का परत्व प्रसिद्ध है, अज्ञानी नहीं जानते हैं ताते बारम्बार भवसागर में डूबते हैं ॥२५५॥

सकर्मोपासना ज्ञानमनायासेन सिद्ध्यति ।
रामनाम यदा जिह्वा सञ्जपत्यखिलेश्वरम् ॥२५६॥

कर्मोपासना, ज्ञान, विज्ञान, श्रम बिना सिद्ध हो जाता है जिस समय जिह्वा श्रीरामनाम सकल ईश्वर को जपती है सावधान समेत ॥२५६॥

काशीखण्डे श्रीशिववाक्यम्

पेयं पेयं श्रवणपुटके रामनामाभिरामं
ध्येयं ध्येयं मनसि सततं तारक ब्रह्मरूपम् ।
जल्पञ्जल्पन्प्रकृतिविकृतौ प्राणिनां कर्णमूले
वीथ्यांवीथ्यामटति जटिलः कोऽपि काशी निवासी ॥२५७

काशीखण्ड में श्री शंकर जू काशीवासियों से कहते हैं पुरवासियो ! तुम सब श्रवन रूपी दोना से श्रीरामनाम परमपियूष पान करा करो परम सुखदायक तारक नाम परम ब्रह्म स्वरूप

मन में ध्यान करा करो। जिस समय प्राणिन का शरीर त्याग होता है तब महादेव जी दाहिने कान में यह उपदेश करते हैं गली-गली में घूमि-घूमि के जटा-मुकुट धारण किये महा दया-सागर श्रीशंकर हैं ॥२५७॥

यस्यामलं प्रिययशः सुयशोविधाता
ताद्‌र्यध्वजश्च गिरिजे नितरां तथाहम् ।
प्रेम्णा वदामि च शृणोमि सहैव ताभ्यां
तद्रामनाम सकलेश्वरमादिदेवम् ॥२५८॥

जौन श्रीरामनाम का उज्ज्वल यश पावन से पावन श्रीब्रह्मा जी विष्णु भगवान औ हम सर्वदा प्रेम समेत गाया करते हैं तथा श्रवन करते हैं दोनों के संग मिलि के श्रीरामनाम सब ईश्वर के ईश्वर आदिदेव हैं। पार्वति ! निरन्तर सब जीवन को उचित है कि सब वासना छोड़िके श्रीरामनाम परायन हो जाय ॥२५८॥

इदमेकं परं तत्त्वं निर्णीतं ब्रह्मवादिभिः
नाम व्याहरणं शुद्धं सर्व कालेषु प्रेमतः ॥२५९॥

सम्पूर्ण ब्रह्मतत्त्व ज्ञातन ने वही मरम तत्त्व का निरनर सिद्धांत किये हैं के सकल समय सनेह निष्काम बढ़ाय के श्रीराम नाम परमशुद्ध अष्टयाम उच्चारन करे, सकल आशा त्यागि के॥२५९

केदारखण्डे श्रीशंकरवाक्यं पार्वतीं प्रति

रामनाम समं तत्त्व नास्ति वेदान्त गोचरम् ।
यत्प्रसादात्परांसिद्धिं सम्प्राप्ता मुनयोऽमलाः ॥२६०॥

केदारखंड में श्रीशंकर का वचन पार्वती जी से है श्रीराम-नाम सम परात्पर तत्त्व कोई वेदांतन में नहीं है। जौन श्रीराम-

नाम कृपा प्रसाद बड़े-बड़े मुनीश्वर विमल सिद्धिता को प्राप्त भये ॥२६०॥

यतस्सर्वात्मना रामनाम रूपं स्मर प्रिये ।
अनायासेन भो देवि अमरी त्वं भविष्यति ॥२६१॥

हे प्रिये ! ताते सब प्रकार से श्रीरामनाम स्वरूप का सुस्मरन करो विश्वास धारिके थोरे दिन में तुम मेरे सम अविनाशी पद को प्राप्त हो जावोगी ॥२६१॥

रामनाम प्रभावेण ह्यविनाशी पदं प्रिये ।
प्राप्तं मया विशेषेण सर्वेषां दुर्लभं परम् ॥२६२॥

श्रीरामनाम के प्रभाव से हम अविनाशी पद को प्राप्त भये जो पद सबको दुर्ल्लभ था ॥२६२॥

अन्यानि यानि नामानि तानि सर्वाणि पार्वति ।
कार्यार्थे संभवनानीह रामनामादितः प्रिये ॥२६३॥

और जेते श्रीरामचन्द्र के नाम हैं सो सब भक्तन के कार्य सिद्धि करने निमित्त प्रगट भये हैं श्रीरामनाम अनादि सिद्धि स्वतः स्वरूपमय है श्रीरामनाम युगलबरन मनहरन का माहात्म्य अकथ अपार है ॥२६३॥

मार्कण्डेयोऽपि श्रीरामनाम संस्मृत्य सादरम् ।
मृत्युं तीर्त्वाऽविलम्बेन रामनाम परं बलम् ॥२६४॥

श्रीमार्कण्डेय मुनि भी श्रीरामनाम को सादर जपि के मृत्यु रूप सागर को शीघ्र पार हो गये । श्रीरामनाम का महा बल वैभव है ॥२६४॥

तथैव नारदो योगी भक्तभूपास्तथापरे ।
मृत्योर्महार्णवं तीर्त्वा सन्निमग्नाः सुधाम्बुधौ ॥२६५॥

याही भांति श्रीनारद भक्त योग समेत तथा अनन्त भक्त शिरोमनि मृत्युसागर को लांघि के श्रीराम स्वरूप सुधासागर में लीन हो गये श्रीनाम प्रताप से ॥२६५॥

लम्बोदरोऽपि श्रीरामनाममाहात्म्यमुज्वलम् ।
श्रुत्वा च धारितं चित्ते ततः पूज्यः सुरासुरैः ॥२६६॥

श्रीगणेश जी भी श्रीरामचन्द्र सनेही नारद जू के मुख से नाम परत्व मोदक के प्रसंग में सुनिके गुनिके चित्त में धारन करत भये उसी दिन से सबके पूज्य प्रथम होत भये । श्रीरामनाम का महा प्रभाव है ॥२६६॥

एवं नाम प्रसादेन ऋषयो देवतास्तथा ।
मनुष्याः किन्नरा नागयक्षा विद्याधरास्तथा ॥२६७॥

या रीति से श्रीरामनाम की प्रसन्नता से सम्पूर्ण मुनि, देवता, मनुष्य, किन्नर, नाग, यक्ष, गंधर्वादि सकल जीव कृतार्थ भये ॥२६७॥

सर्वे कृतार्था अभवन् तस्मिन्तस्मिन्युगेयुगे ।
नातः परतरोऽपायो दृश्यते श्रूयतेऽपि वा ॥२६८॥

चारों युग में जीव श्रीराम प्रताप से भवसागर से पार होय के परम प्रमोद पावते भये । इसके परे और उपाय लोक वेद में नहीं देखि सुनि पड़ता है ॥२६८॥

निर्बाणखण्डे श्रीशिववाक्य श्रीरामं प्रति

भवन्नामामृतं पीत्वा गीत्वा च भवतां यशः ।
शिवोऽहं सर्वदेवेश्च पूजनीयो दयानिधे ॥२६९॥

निर्वानखण्ड में श्रीशंकर का वचन श्रीरामचन्द्र महाराज से है—आपके श्री नामामृत का पान करिके तथा आपका यश गायके हम परम शिव पद को पाया है सब देवतन से पूजनीय भये हैं, हे दयासागर जू ! ॥२६९॥

निराकारं च साकारं सगुणं निर्गुणं विभो ।
उभौ विहाय सर्वस्वं तव नाम स्मराम्यहम् ॥२७०॥

निराकार, साकार, निर्गुन, सगुन सबकी आशा छोड़िके हे श्रीराम परमेश्वर ! आपका सर्वोपरि सारांश समुझि के नाम स्मरन करते हैं ॥२७०॥

मन्दात्मानो न जानन्ति बहिरर्थ स्पृहायुताः ।
रामनाम परंब्रह्म सर्ववेदान्त सम्मतम् ॥२७१॥

मन्द चित्त वाले विषयी बाहर पदार्थन में आसक्त रहते हैं सो श्रीरामनाम सर्व वेदान्त सम्मत के स्वरूप को कैसे समुझें, श्रीरामनाम ही परब्रह्म स्वरूप है ॥२७१॥

जगत्प्रभुं परमानन्दं कारणं सदसत्परम् ।
रामनाम परेशानं सर्वोपास्यं परेश्वरम् ॥२७२॥

जगत के स्वामी, परानन्द के कारन, सूक्ष्म-स्थूल ते परे, सबसे समर्थ सबके उपास्य, परम ईश्वर श्रीरामनाम है ॥२७२॥

सर्वेषां मत साराणामिदमेकं महन्मतम् ।
जानकीजीवनस्याथ नामसंकीर्त्तनं परम् ॥२७३॥

सब मतन का सार महाश्रेष्ठ मत यही है कि श्री जानकी जीवन के नाम का उच्चारन कीर्तन करना और सब भ्रम है ॥२७३॥

कोशलखण्डे श्रीसूतवाक्यं ऋषीन् प्रति

न तत्पुराणोनहियत्ररामोयस्यांनरामो नहि संहिता सा
स नेतिहामो नहि यत्र रामः
काव्यं न तस्यान्न हि यत्र रामः ॥२७४॥

कोशल खण्ड में सूत जी का वचन मुनिन ते है—श्रीराम नाम सम्बन्ध रहित पुरान संहिता इतिहास काव्य सब अर्थरूप है नाम समेत सब सुखदायक है ॥२७४॥

शास्त्रं न तस्यान्नहि यत्र रामस्तीर्थं न तद्यत्रनरामचंद्रः
यागः स आगो नहि यत्र रामः
योगी स रोगी नहि यत्र रामः ॥२७५॥

सो शास्त्र नहीं है असत शास्त्र है जिसमें श्रीरामनाम परत्व नहीं औ तीर्थ भी उह नहीं जिसमें श्रीरामचन्द्र महाराज का परत्व पूजा स्थान नहीं औ उह यज्ञ अपराधमय है जिसमें श्रीराम सम्बन्ध नहीं औ अष्टांग योग रोग रूप है जिसमें श्रीरामनाम रूप स्मरन ध्यान नहीं ॥२७५॥

न सा सभा यत्र न रामचन्द्रः
कालोऽप्यकालः कलिरेव सोऽस्तु ।
संकीर्त्यते यत्र न रामदेवो
विद्याप्यविद्या रहिताह्यनेन ॥२७६॥

सो सभा प्रभाहीन महामलीन है जहां श्रीरामनामादिक की चरचा नहीं । उह समय महा कलिकाल रूप है जिस समय में श्रीरामनामादि सम्बन्ध नहीं । सो विद्या महा अविद्यारूप है जहां सीताराम गुन निरूपन न होय ।.२७६॥

स्थानं भयं स्थानमरामकीर्ति
रामेतिनामामृतं शून्यमास्यम् ।
सर्पालयं प्रेतगृहं गृहं तद्
यत्रार्च्यते नैव महेशपूज्यः ॥२७७॥

सो स्थान महा भयदायक ठौर है जहां श्रीराम सुयश न होय। श्रीरामनाम रहित मुख महामलीन शून्य स्थान है सो घर सर्प गृह सम है जहां श्रीराम महेश पूज्य की पूजा न होय २७७॥

उक्तेन किं स्याद्बहुनात विश्वं
सर्वं मृषास्याद्यदि रामशून्यम् ।
एतच्च कृष्णः पुनराहनोसौ
स्पृष्टोपवीतं जपमालिकां च ॥२७८॥

बहुत कहने से कहा काम है, थोरे में जान लेवो। सब संसार श्रीरामनामादि सम्बन्ध रहित झूठ है। हे मुनीवरों! इह बात हमको श्रीव्यासजी ने गंगा के बीच खड़े होय के जनेऊ माला हाथ में पकड़ के कहा था। अभिप्राय सत्य में है ताते सब त्यागि के श्रीरामनाम रटो ॥२७८॥

रकारोध्वजवत्प्रोक्तो मकारश्छत्रवत्तथा ।
सर्व वर्ण शिरस्थो हि राम इत्युच्यते बुधैः ॥२७९॥

रकार ध्वजा समान तथा मकार छत्र समान सब वरणन के शिर पर विराजमान हैं, ताते रामनाम सर्वोपरि है, सकल सुबुध संत श्रुति सम्मत है ॥२७९॥

रकारार्थो भवेद्रामः परमानन्दविग्रहः ।
मकारार्थो भवेत्सीता सच्चिदानन्दरूपिणी ॥२८०॥

रकार श्रीराम परमानन्द स्वरूप का वांचक है। मकार श्री सीता सच्चिदानन्द स्वरूपिनी का वाचक है। इहां वाच्य परम अभेद है ॥२८०॥

जैमिनि पुराणे

रामनाम परं स्वादु भेदज्ञा रसना चय ।
तन्नाम रसनेत्याहुर्मुनयस्तत्त्वदर्शिनः ॥२८१॥

जैमिन पुरान में कहा है—श्रीरामनाम रस स्वाद को जानने वाली सोई रसना है। उसी जिह्वा की प्रसंशा महामुनीश्वर करते हैं और मांस का टुकड़ा है ॥२८१॥

कर्माधीनं जगत्सर्वं विष्णुना निर्मितं पुरा ।
तत्कर्म केशवाधीनं रामनाम्ना विनश्यति ॥२८२॥

सब जगत कर्म के आधीन विष्णु भगवान ने रचा है सो कर्म केशव के आधीन हैं, परन्तु श्रीरामनाम जपे बिना उसका निर्मूल नहीं हो सकता है, ताते श्रीरामनाम जपो ॥२८२॥

इति श्रीसीतारामनामप्रतापप्रकाशे परात्परविभासनिवासे परात्परैश्वर्यदायके भाषाटीकायां श्रीनामपरत्वप्रकाशिकायां श्रीयुगलानन्यशरण संगृहीते उपपुराण इतिहासादिनिरूपणनाम द्वितीये. प्रमोदः ॥२॥

अथ संहितोक्त वचनानि

अगस्त संहितायां श्रीशंकरवाक्यं श्रीरामचन्द्रं प्रति

अहं भवन्नामजपन्कृतार्थो
वसामि काश्यां सहितं भवान्या ।
मरिष्यमाणस्य विमुक्तयेऽपि
दिशामिमन्त्रं तव रामनाम ॥१॥

श्रीअगस्त संहिता में महादेव जी का वचन श्रीरामचन्द्र महाराज से है—हम आपका नाम जप करते हुए सर्वदा पार्वती जी के समेत काशी में बसते हैं औ जिनका शरीर त्याग होने लगता है तिनके मोक्षार्थ आपका परात्पर रामनाम उपदेश करते हैं महामन्त्र नाम है ॥१॥

रकारो रामचन्द्रस्स्यात्सच्चिदानन्दविग्रहः ।
अकारो जानकीप्रोक्तः मकारो लक्ष्मणः स्वराट ॥२॥

रकार सर्वोपरि सच्चिदानन्द स्वरूप साक्षात् श्रीरामचन्द्र महाराज हैं औ अकार श्रीजानकीजी सर्व शक्ति वंदिता हैं। मकार श्रीलक्ष्मण जी हैं, आपही करिके प्रकाशमान हैं। जापक को ऐसा अनुसन्धान जप समय करना चाहिए नाम नामी परम अभेद हैं ॥२॥

रकारेण बहिर्याति मकारेण विशेत्पुनः ।
रामरामेति सच्छब्दो जीवो जपति सर्वदा ॥३॥

रकार का उच्चारन श्वांस के बाहर आवने समय करे औ मकार का उच्चारन भीतर श्वांस आवने समय करे, यह परम अजपासार है। जीवमात्र जपता है परम लक्ष्य बिना सुख नहीं पावता ॥३॥

दैन्यं दिनं तु दुरितं पक्षमासर्तुवर्षजम् ।
सर्वं दहति निःशेषं तूलाचलमिवानलः ॥४॥

दिन का पाप तथा पक्षमास वर्ष का पाप सब एक बार राम कहे नष्ट हो जाता है जैसे रुई का पर्वत आग सम्बन्ध से शीघ्र नष्ट हो जाता है ॥४॥

नामसंकीर्तनञ्चैव गुणानामपि कीर्त्तनम् ।

भक्त्या श्रीरामचन्द्रस्य वचसा शुद्धिरिष्यते ॥५॥

श्रीरामनाम गुन संकीर्त्तन से वानी परम शुद्धि हो जाती है। सनेह समेत करे वाचा सिद्ध होय ५॥

विश्वामित्र संहितायां विश्वामित्र वाक्य वैश्य प्रति

विश्रुतानि बहून्येव तीर्थानि विविधानि च ।
काऽप्यंशशान्नापि तुल्यानि नाम संकीर्त्तनस्य ॥६॥

श्रीविश्वामित्र संहिता में विश्वामित्र जी का बचन किसी बड़भागी वैश्य से है वेद पुरानादिकन में विदित नाना प्रकार के तीर्थ ख्यात हैं सो सब श्रीरामनाम के कोट अंश सम पुनीत शक्तिप्रद नहीं हैं उन सबकी पावनता श्रीरामनामाधीन है ॥६॥

धन्याः पुण्याःप्रपन्नास्ते भाग्ययुक्ता कलौयुगे ।
संविहायाथ योगादीन् रामनामैक नैष्ठिकाः ॥७॥

परम धन्य रूप प्रपन्न शिरोमनि भाग्यवान सुखखान कलियुग में सोई है जौन योगादिकन का कठिन पन्थ त्यागि के काहू भांति श्रीरामनाम में निश्चय प्रेम किये हैं ॥७॥

रकारा रामरूपस्तु मकारस्तस्य सेवकः ।
आचार्यस्तु ह्यकारः स्वात्तयोः संयोजनाय च ॥८॥

रकार श्रीराम स्वरूप है औ मकार शुद्ध आत्मा सेवक रूप है औ रकार में जो अकार है सो आचार्य्य रूप है। जीव ईश को मिलाय देते हैं नाना अर्थ नाम में है अधिकारी प्रति ॥८॥

राम रामेति यो नित्यं मधुर जपति च्चणम् ।
स सर्वसिद्धिमाप्नोति सत्यं नैवात्र संशयः ॥९॥

श्रीरामनाम जो मधुर स्वर से च्चन भर जप करते हैं सो श्रीराम प्रसन्नतारूप सर्व सिद्धि पावते हैं। संशय न करना

कदाचित् श्रीरामनाम परत्व में ॥९॥

ब्रह्मघ्नश्च सुरापश्च स्तेयी च गुरुतल्पगः ।
शरणागतिघातो च मित्र विश्रम्भकारकः ॥१०॥

ब्राह्मनघाती, मद्यपी, सुवर्ण चुराने वाला, गुरुपत्नी पर कुदृष्टि करने वाला, विश्वासघाती, मित्र मारने वाला ॥१०॥

लब्धं परं पदं तेन जन्म कोटिभिरर्जितम् ।
कीर्तितं येन महता श्रीरामेत्यक्षरद्वयम् ॥११॥

कोटिन जन्मन के सुकृत से कमाया हुआ जो परम पद दुर्लभ सो उसने पाया जिस महात्मा ने श्रीरामनाम दोनों वरन हिय हरन उच्चारन किया ॥११॥

ज्ञातमध्यात्मशास्त्रं च प्राप्तं तेनामृतं महत् ।
कीर्तितं येन वचसा श्रीरामेत्यक्षरद्वयम् ॥१२॥

वेदांत शास्त्र के सिद्धांत को तिन्होंने अच्छी भांति से जाना औ परम मोक्ष पाय चुके जिन महात्मा ने श्रीराम दोनों वरनराज उच्चारन किया ॥१२॥

सर्वमन्त्रमयं नाम यन्त्रास्पदमनुत्तमम् ।
स्वाभाविकीं परां सिद्धिं दुर्लभां तज्जपाल्लभेत् ॥१३॥

सकल मंत्र यन्त्रमय परम उत्तम श्रीरामनाम है। सहज सुखमयी परा सिद्धि अति दुर्लभ श्रीरामनाम जप के अधीन है, प्राप्त होत है ॥१३॥

वृथा नाना प्रयोगेषु मन्त्रतन्त्रेषु मानवाः ।
यत्नं कुर्वन्त्यहो मूढास्त्यक्त्वा श्रीनाम सुन्दरम् ॥१४॥

वृथा ही मूढ़तावश करिके नाना प्रयोग मन्त्र यन्त्रन में पचते हैं परम मोदप्रद सुन्दर श्रीरामनाम को छोड़ि के ॥१४॥

यस्य संस्मरेणादेव सर्वार्थाश्चक्षु गोचराः ।
भवेन्त्येवानयासेन तच्छ्रीराममहं भजे ॥१५॥

जौन श्रीरामनाम परम मोद धाम को श्रद्धाभक्ति समेत जप स्मरन संकीर्त्तन करने से सम्पूर्ण पदार्थ लोक परलोक के भलीभांति प्रत्यक्ष हो जाते हैं थोरे दिन में श्रम बिना, ऐसे श्रीरामनाम महाराजाधिराज को हम सदा भजते हैं सकल आशा त्याग करिके ॥१५॥

सौरसंहितायाम्

श्रीरामनाममनिशं परिकीर्त्तनीयं
वर्तंतमोद सु निधानमशेष सारम् ।
जन्मार्जितानि विविधान्यपहाय दुःखा
न्यत्यन्त धर्म निचयं परधाममेति ॥१६॥

सौर संहिता में कहा है—श्रीरामनाम सदा उच्चारन करने योग्य हैं सब सुख के स्थान सबके सार हैं । अनन्त जन्मन से कमाया हुआ पाप महादुःख रूप त्यागि के सब शुद्ध धर्म का सदन श्रीरामधाम में जाते हैं ॥१६॥

स सागरां महीं दत्वा शुद्धकाञ्चन पूणिताम् ।
यत्फलं लभते लोके नामोच्चारम्ततोऽधिकम् ।१७॥

सब समुद्र सहित कञ्चनमयी भूमि जो सुपात्र को दान देते हैं, उनको जो फल होता है उससे अनन्त गुन फल श्रीरामनाम उच्चारन से होता है ॥१७॥

वाच्यश्श्रीरामचन्द्रस्तु वाचको नाम संस्मृतम् ।
वाच्यवाचक सम्बन्धो नित्यमेव न संशयः ॥१८॥

वाच्य श्रीराम रूप है औ वाचक श्रीरामनाम है। वाच्य वाचक का नित्य सम्बन्ध है, परम अभेद है ॥१८॥

जाबालि संहितायाम्

रामनाम परं जाप्यं ज्ञेयं ध्येयं निरन्तरम् ।
कीर्त्तनीयं च बहुधा मुमुक्षुभिरहर्निशम् ॥१९॥

जाबालि मुनि की संहिता में कहा है—श्रीरामनाम परम जप ध्यान जानिबे योग्य है तथा दिन-रात क्षन-क्षन में कीर्तन स्मरन करिबे योग्य है मुमुक्षुन को ॥१९॥

श्रीरामनाम सामर्थ्यादखिलेष्टं करे स्थितम् ।
भवन्ति कृत पुण्यानां यथाकल्पतरोर्द्धनम् ॥२०॥

श्रीरामनाम के शक्ति सामर्थ्य से सकल सिद्धि मनोरथ हाथ में प्राप्त हो जाता है। परम सुकृतिन को जैसे कल्पवृक्ष से धन सम्पूर्ण लाभ होत है ॥२०॥

नाम्नि यस्य रतिर्नास्ति सतु चांडालनिश्चितम् ।
सम्भाषणं न कर्तव्यं तत्समं नामतत्परैः ॥२१॥

जिस जीव का श्रीरामनाम में प्रीति नहीं है सो महाचांडाल नीच है तिसके साथ बोलना न चाहिए श्रीरामनाम रसिकन को।२१

रामनाम प्रभा दिव्या यस्योरसि प्रकाशते ।
तस्यास्ति सुलभं सर्वं सौख्यं सर्वेशजं परम् ॥२२॥

श्रीरामनाम की महा दिव्य प्रभा जिसके हृदय कमल में प्रकाशती है तिस महात्मा को परमेश्वर सम्बन्धी सब सुख सहज ही में हो जाता है ॥२२॥

साधनेन विना सिद्धिर्हष्टं नाम्नैव संस्फुरम् ।
अन्तत्र साधनैः दुःखैः दुर्लभं तन्महत सुखम् ॥२३॥

बिना साधन श्रम के सर्व सिद्धि सुख श्रीरामनाम ही से स्पष्ट हमने देखा है और साधनन से महासुख दुर्ल्लभ से दुर्ल्लभ है ॥२३

सूत संहितायाम्

यः श्रीरामपदं नरः प्रतिपदं संकीर्तयन्तत्क्षणा
न्मुक्तोदुष्कृतराशितो बुधजनैः पूज्यो विवस्वत्प्रभः ।
त्यक्त्वा संसृति मृत्यु दुःख पटलं संशुद्धचित्तः पुमान्
श्रीरामास्पदमुन्नतं पर पदं प्राप्नोत्ययासं बिना ॥२४॥

सूत संहिता में श्रीरामनाम का परम परत्व कथन है—जौन श्रीरामनाम को मनुष्य पद पद प्रतिउच्चारन करते हैं सो शीघ्र ही सब पाप से छूट के तथा सब देवन से पूजनीय होय के सूर्य्य सम प्रकाशमान होते हैं। संसृति चक्र, मृत्यु फांस, दुःख पटल से रहित होय के परम शुद्ध चित्त होय के सर्वोपरि प्रकाशमान श्रीरामधाम में जाते हैं श्रम बिना ॥२४॥

रिपवस्तस्य नश्यन्ति न बाधन्ते ग्रहाश्च तम् ।
राक्षसाश्च न खादन्ति नरं रामेति वादिनम् ॥२५॥

उसके सब शत्रुन का नाश हो जाता है औ ग्रहगन उसको बाधा नहीं कर सकते हैं, भूत, प्रेत, राक्षस घात नहीं करि सकते हैं। तिनको जौन श्रीरामनाम उच्चारन करते रहते हैं ॥२५॥

अहो धैर्यमहोधैर्यमहोधैर्यमिदं नृणाम् ।
रामनाम्नि स्थिते लोके न भजन्ति बहिर्मुखाः ॥२६॥

बड़ा धीरज, बड़ा धीरज, बड़ा धीरज मनुष्य करि रहे हैं। देखो प्रगट श्रीरामनाम तिनका उच्चारन विमुख नहीं करते, बृथा उनका जन्म है ॥२६॥

रामनामामृतं पीत्वा भवेन्नित्यं निरामयम् ।

सिद्धान्तं सारमित्येकं साधूनां भावितात्मनाम् ॥२७॥

श्रीरामनाम महा पीयूष पान करिके संसार रोग से रहित हो जाता है। शुद्धान्तः करनवाले सन्तन का यही परम सिद्धान्त है ॥२७॥

श्रीरामं रामभद्रं च सीतारामं सुखाकरम् ।
इतीरयन्ति ये नित्यं ते वै धन्यतमा नराः ॥२८॥

श्रीरामनामादिक नाम महा सुखखानि जो उच्चारन करते हैं सो महाधन्य हैं ॥२८॥

ब्रह्म संहितायां श्रीशिववाक्यं

रामेति वर्णद्वयमादरेण सदा स्मरन्मुक्तिमुपैति जन्तुः।
कलौयुगे कल्मषमानसाना
मन्यत्र धर्मे खलु नाधिकारः ॥२९॥

ब्रह्म संहिता में सब मुनिन प्रति श्रीशिववाक्य है—श्रीराम दो वरन आदर समेत सदा जो स्मरन करते हैं सोई मोक्ष पावेंगे और नहीं। पाप ग्रसित हृदय वालन को और कोई धर्म कलियुग में न फलेगा चाहे जैसा श्रम करे श्रीरामनाम सब प्रकार सुखप्रद है ॥२९॥

यन्नामकीर्त्तन फलं विविधं निशम्य
न श्रद्दधाति मनुते यदुतार्थवादम् ।
यो मानुषस्तमिह दुःखचये क्षिपामि
संसार घोर विविधार्त्तिनिपीडिताङ्गम् ॥३०॥

श्रीरामनाम कीर्त्तन स्मरन का फल नाना प्रकार का श्रवन करिके जो यथार्थ नहीं मानते हैं औ कुतर्क करते हैं तिनको परमेश्वर दुःख समूह सिंधु में डूबा देता है जिसमें नाना प्रकार का

क्लेश है, ताते श्रीरामनाम विश्वास करना चाहिए ॥३०॥

कलिप्रभावतो नष्टाः सद्ग्रन्थानां कथाः शुभाः ।
पाखण्डैर्निर्मितं नानामतं श्रीनाम वर्जिनम् ॥३१॥

कलियुग के प्रभाव ते श्रीरामनामादि परत्व प्रकाशक सद्ग्रंथ नष्ट हो गये औ पाखंडिन ने नया नया मतवाद वितण्डामय रचना करिके जीवन को भ्रमाय दिया। श्रीरामनाम रहित सब ग्रंथ कल्पित असत हैं ॥३१॥

अतस्सर्वं परित्यज्य नामसंस्मरणे रताः ।
त एव कृतकृत्याश्च सर्व वेदार्थ कोविदाः ॥३२॥

ताते सकल साधन छोड़िके जो श्रीरामनाम में रत हैं तथा वेद सिद्धान्त ज्ञाता हैं ॥३२॥

श्रीरामेति वदन् जीवो याति ब्रह्म सनातनम् ।
सर्वाचारविहीनोऽपि ताप क्लेशादि संयुतः ॥३३॥

श्रीरामनाम कहते ही मात्र में सनातन ब्रह्म को प्राप्त होता है चाहे जैसा पाप ताप क्लेश सहित होय ॥३३॥

बोधायन संहितायाम्

इष्टापूर्त्तानि कर्माणि सु बहूनि कृतान्यपि ।
भव हेतूनि तान्येव रामनाम्ना सु मुक्तयः ॥३४॥

बोधायन संहिता में श्रीकुश का वचन है—अग्निहोत्र, बाटिका, वापी, आदिक जेते शुभाचरन हैं सो सब संसार के हैं श्रीरामनाम से मोक्ष है ॥३४॥

श्रीमद्रामेतिनाम्नस्तु सदा सर्वत्र कीर्त्तनम् ।
नाशौचं कीर्त्तने तस्य स पवित्रकरो यतः ॥३५॥

श्रीमान् रामनाम का उच्चारन सर्व समय सर्व देशन में करना उचित है। श्रीरामनाम उच्चारन में पवित्र अपवित्र का विचार कुछ नहीं करना चाहिए, जाते श्रीरामनाम स्वतः महा पवित्र है, अन्य पुनीतता की अपेक्षा नहीं हैं ॥३५॥

रामनामानि लोकेस्मिन् सर्वदा यस्तु कीर्त्तयेत।
तस्यापराध कोटिस्तु क्षमाम्येव न संशयः ॥३६॥

श्रीरामनाम जो इस लोक में संकीर्त्तन करते हैं तिसके कोटिन अपराधन को हम क्षमा करि लेते हैं। श्रीराम वचन हैं, संशय बिना मानना उचित है ॥३६॥

न तादृशं महाभाग पापं लोकेषु विश्रुतम् ।
यादृशं विप्र शार्दूल रामनाम्ना विदह्यते ॥३७॥

ऐसा पाप प्रबल लोक में कोई नहीं सुन पड़ता है तथा वेद में दीख पड़ता है जो श्रीनाम उच्चारन करने से जल न जाय॥३७

श्रीरामनाम सामर्थ्यमतुलं विद्यते द्विज ।
न हि पापात्मकस्तावत्पापं कर्तुं क्षमः क्षितौ ॥३८॥

श्रीरामनाम का सामर्थ्य अनूपम सर्वोपरि है। इतना पाप पापी करि नहीं सकता है जितना पाप श्रीरामनाम शक्ति से नाश हो जाता है भूमि में ॥३८॥

तापनीय संहितायाम्

सर्वेषामेव दोषाणां प्रायश्चित्तं परं स्मृतम् ।
अपमृत्यु प्रशमनं मूलाविद्या विनाशनम् ॥३९॥

तापनी संहिता में कहा है—सकल दोषन का प्रायश्चित परम श्रेष्ठ श्रीरामनाम है अपमृत्यु जो सर्पादिक सम्बन्ध से मरन और महा अज्ञान अनादि रूप तिसका नाश हो जाता है श्री-

नाम सम्बन्ध से ॥३९॥

नाम संकीर्त्तनं विद्धि अतो नान्यद्वदाम्यहम् ।
सर्वस्वं रामचंद्रोऽपि तन्नामानन्त वैभवम् ॥४०॥

श्रीरामनाम उच्चारन बिना और सुखप्रद तुम न जानो, शिवादिकन का सर्वस्व श्रीरामनाम हैं। श्रीनाम का महा अद्भुत विभूति केवल यथार्थ जानते हैं, कहि नहीं सकते ॥४०॥

स्वप्नेऽपि यो वदेन्नित्यं रामनाम परात्परम् ।
सोऽपि पातकराशीनां दाहको भवति ध्रुवम् ॥४१॥

स्वप्न में भी कोई संस्कार संग सम्बन्ध से श्रीरामनाम उच्चारन करते हैं उनके भी सब पाप शीघ्र भस्म हो जाते हैं नाम प्रताप से, निश्चय जानोगे ॥४१॥

पापद्रुम कुठारोऽयं पापेन्धन दावानलम् ।
पापराशितमस्तोमं रवि साक्षात्प्रभानिधिः ॥४२॥

पाप रूप वृक्ष को काटने को कुठार, पापरूप इंधन जलावने को दावानल तथा अघ समूह तमरूप नाशने को साक्षात् महासूर्य प्रभापुञ्ज श्रीरामनाम है ॥४२॥

रामनाम परंधाम पवित्रं पावनास्पदम् ।
अतः परं न सन्मन्त्रंतारकं विद्यते क्वचित् ॥४३॥

श्रीरामनाम परम प्रकाशधाम महा पावनता के धाम चित्त शुद्धता के कारन हैं इनके परे और संसार से तारक दूजा नहीं है, महामन्त्र श्रीरामनाम है ॥४३॥

हिरण्यगर्भ संहितायां श्रीअगस्तवाक्यं सुतीक्ष्णं प्रति

अभिरामेति यन्नामकीर्त्तितं विवशाच्च यैः ।
तेऽपि ध्वस्ताखिलाघौघा यान्ति रामास्पदं परम् ॥४४॥

हिरण्यगर्भ संहिता में श्रीअगस्त्य जी का वचन सुतीक्ष्ण मुनि से है—महासुखसदन श्रीरामनाम जो पराये वश से भी उच्चारन करता है जो भी सब पापन को नाश करिके श्रीराम-धाम परात्पर में प्राप्त होता है संशय बिना ॥४४॥

श्रीरामेति वदन्ब्रह्मभावमाप्नोत्यसंशयम् ।
तत्त्वं विद्यार्थिनो नित्यं रमन्ते चित्सुखात्मनि ॥४५॥

श्रीरामनाम कहते ही ब्रह्म स्वरूप हो जाता है। यथार्थ विद्या के चाहने हारे मुनीश्वर श्रीरामनाम सच्चिदानन्द में रमन करते हैं ॥४५॥

इति रामपदेनासौ परं ब्रह्माभिधीयते ।
सर्वसिद्धान्तमित्याहुः सर्वे वै ब्रह्मवादिनः ॥४६॥

याही हेतु श्रीरामनाम परब्रह्म कहे जाते हैं औ सब ब्रह्मज्ञानिन का यही सिद्धान्त है ॥४६॥

श्रीरामेति परं मन्त्रं तदेव परमं पदम् ।
तदेव तारकं विद्धि जन्म मृत्यु भयापहम् ॥४७॥

श्रीरामनाम ही परम मन्त्र, परम पद, तारक जन्म मृत्यु के भय से है अपर नहीं ॥४७॥

अल्पेन नाम्ना कथमस्य पाप
क्षयो भवेदत्र न शङ्कनीयम् ।
तृणादि राशिं दहतेऽल्पवह्निः
तथा महामोहमदादिनाम ॥४८॥

थोड़े नाम से इसका सब पाप कैसे नाश हो सकेगा तौ प्रगट पेख लेवो। आग थोड़ा सा सुमेरु सम तृन रासको जलाय देता है शीघ्र ही तौ श्रीरामनाम में कहा शंका। श्रीरामनाम प्रताप

स्मरन से मोहादिक नाश हो जाते हैं ॥४८॥

पुलह संहितायाम्

बीजे यथा स्थितो वृक्षः शाखा पल्लव संयुतः ।
तथैव सर्ववेदाश्च रकारेषु व्यवस्थिताः ॥४९॥

पुलहमुनि की संहिता में कहा है—जैसे बीज में बृक्ष का शाखा, फूल, फल सम्पूर्ण रहता है तैसे ही सब वेद पुरान रकार में स्थित हैं ॥४९॥

यथा करण्डे रत्नानि गुप्तान्यज्ञैर्न दृश्यते ।
तथैव सर्व मन्त्राश्च रकारेषु व्यवस्थिताः ॥५०॥

जैसे डब्बा का रत्न गुप्त अज्ञानी नहीं जानि सकता है, तैसे सब वेद मंत्र साधन साध्य श्रीरामनाम में हैं परन्तु विज्ञ जानते हैं इहां गोप्यता में दृष्टांत है, अन्य भाव नहीं है ॥५०॥

रकारोच्चारणेनैव बहिर्निर्याति पातकम् ।
पुनः प्रवेशकाले च मकारस्तु कपाटवत् ॥५१॥

रकार उच्चारन करने मात्र से सब परिताप विनाश हो जाते हैं, जब फेर प्रवेश करने लगते हैं तब मकार कपाट सम लग जात है अभिप्राय इह है के मकार उच्चारन समय मुख बन्द हो जाता है। परम योग श्रीरामनाम उच्चारन है। ५१॥

सावित्री ब्रह्मणा सार्द्धं लक्ष्मीनारायणेन च ।
शम्भुनारामरामेति पार्वती जपति स्फुटम् ॥५२॥

ब्रह्माजी के साथ सावित्री, लक्ष्मी समेत श्रीनारायन, पार्वती संग श्रीमहादेवजी श्रीरामनाम स्पष्ट जपते हैं। तीनी ईश्वर श्रीरामनाम परायन हैं और गरीबन के को कहै ॥५२॥

राम रामेति रामेति स्वपन् जाग्रंस्तथा निशि ।

ये जपन्ति कलौ नित्यं ते वै श्रीरामरूपिणः ॥५३॥

श्रीराम राम राम जो सोते, जागते, सर्वसमय श्रद्धा समेत कहते हैं कलियुगमें श्रीरामरूप है बड़ा परत्व श्रीरामनाम का है५३

पराशर संहितायां व्यासवाक्यं साम्बं प्रति

न साम्ब व्याधिजं दुःखं हेयं नानौषधैरपि ।
राम नामौषधं पीत्वा व्याधिस्त्यागो न संशयः ॥५४॥

पराशर संहिता में श्री व्यास वचन सांब श्रीकृष्ण पुत्र से है- हे प्रिय ! महाकुष्टरूप व्याधि सम्बन्धी दुःख नाना औषधन से निवृत्ति न होगा ताते श्रीरामनाम महा अमीमय औषधि पान करो, सहज में सब रोग शोक मिटि जायँ, संशय न करना॥५४॥

कोटि जन्मार्जितं पापमौषधैः शान्तिमेति किम् ॥
कीर्त्तनीयं परं नाम भवव्याधेस्तदौषधम् ॥५५॥

कोटिन जन्मन का पाप कमाया हुआ पाप औषधि से शांति न होगा । ताते संसार रोग तथा सब रोग नाशक परम औषधि श्रीरामनाम कीर्त्तन स्मरन करो, सब त्यागि के ॥५५॥

सर्व रोगोपशमनं सर्वाधीनां विनाशनम् ।
स्मरणं रामरामेति महामोदैक मन्दिरम् ॥५६॥

सकल शरीर के तथा मन के समस्त रोगन के नाशक श्रीरामनाम है । महामोद के मन्दिर है ऐसे श्रीरामनाम को निरन्तर सकल वासना त्यागि के जपना चाहिए सबको ॥५६॥

श्रीरामनाम विमुखं जीवं शोधयितुं त्तमम् ।
प्रायश्चित्तं न चैवास्ति कश्चित सत्यं वचो मम ॥५७॥

श्रीरामनाम से विमुख जीवन के पाप को शुद्ध करनहारा कोई प्रायश्चित नहीं है सत्य सत्य मेरा वचन है ॥५७॥

प्रायश्चित्तेषु सर्वेषु रामनाम जपं परम् ।
यतीनां रामभक्तानां सर्वरीत्या विशिष्यते ॥५८॥

सब प्रायश्चित्तन में महा उत्तम पाप विनाशक प्रायश्चित शिरोमनि श्रीरामनाम उच्चारन है और सब व्यर्थ है। औ सन्यासी तथा श्रीरामभक्तन को तौ और प्रायश्चित करना उचित नहीं है केवल सब पापन का विनाश श्रीरामजप द्वारा कर्त्तव्य है।।५८।।

सनत्कुमार संहितायां श्रीव्यासवाक्य युधिष्ठिरं प्रति

श्रीरामेति परं जाप्यं तारकं ब्रह्मसंज्ञकम् ।
ब्रह्महत्यादि पापघ्नमिति वेदविदोविदुः ॥५९॥

श्रीसनत्कुमार संहिता मेंश्रीव्यास जी का विशद सिद्धांतमय वचन श्रीयुधिष्ठिर महाराज के प्रति है–हे नृप श्रेष्ठ श्रीरामनाम परम जप करिबे योग है, ब्रह्म स्वरूप है, संसारसागर से तारक है। ब्रह्महत्यादिक सब पापन के नाशक हैं इस भेद को परम वेदविज्ञ जानते हैं ॥५६॥

श्रीरामरामेति जना ये जपन्ति च सर्वदा ।
तेषां भुक्तिश्च मुक्तिश्च भविष्यति न संशयः ॥६०॥

श्रीराम राम राम जौन जन सर्वदा जपते हैं तिनकी भुक्ति मुक्ति भक्ति सब संशय रहित प्राप्त होती हैं शीघ्र ही ॥६०॥

ब्रह्महत्यादि पापानि तत्समानि बहूनि च ।
स्वर्णस्तेयंसुरापानंगुरुतल्पायुतानि च ॥६१॥

ब्रह्महत्यादिक महापाप तैसे ही और सब पाप समूह सुबरन चोरी, सुरापान, गुरुपत्नि शय्या सम्बन्ध कोटिन बार ॥६१॥

गोवधाद्युपपापानि अनृतात्सम्भवानि च ।
सर्वैः प्रमुच्यते पापैः कल्पायुतशतोद्भवैः ॥६२॥

गोवधादिक उस पाप समूह, मिथ्या सम्भावनादिक पाप कोटिन कल्पन का कमाया ॥६२॥

मानसं वाचिकं पापं कर्मणा समुपार्जितम् ।
श्रीरामस्मरणेनैव तत्क्षणान्नश्यति ध्रुवम् ॥६३॥

मन वचन शरीर से जेता पाप अनेक जन्मन से किया होय सो सब श्रीरामनाम स्मरन मात्रसे क्षण भर में विनाश हो जाता है निश्चय करिके। पुनि विस्मरन सम्बन्ध से प्रगट हो जाते हैं, जो सदा कहता रहे सो ब्रह्मरूप है ॥६३॥

इदं सत्यमिदं सत्यं सत्यमेतदिहोच्यते ।
रामः सत्यं परब्रह्म रामात्किंचिन्न विद्यते ॥६४॥

सत्य सत्य हम कहते हैं। श्रीरामनाम परब्रह्म सत्य एक रस है। श्रीराम से परे और कुछ नहीं है। सर्वश्रेष्ठ परात्पर श्रीराम हैं, सबमें श्रीरामनाम की शक्ति परिपूर्ण है कहीं खाली नहीं है ॥६४॥

सुश्रुत संहितायाम्

दृष्टो येनैव श्रीराम तथा तन्नामकीर्त्तनम् ।
कृतं सर्वं शुभं तेन जितं जन्म सुदुर्लभम् ॥६५॥

सुश्रुत संहिता में कहा है-जिस महात्मा बड़भागी ने श्रीराम स्वरूप का साक्षात् दर्शन पाया अथवा श्रीरामनाम सनेह सहित कीर्त्तन किया, तिन्होंने अति दुर्ल्लभ शरीर पाय के बाजी जीत लिया उनकी हार कदाचित् न होगी सत्य जानोगे ॥६५॥

कारणं प्रणवस्यापि रामनाम जगद्गुरुम् ।
तस्माद्धेय सदा चित्तो यतिभिः शुद्धचेतसः ॥६६॥

श्रीरामनाम समस्त विश्व के स्वामी, ॐकार के भी कारन हैं।

श्रीरामनाम ही से प्रनव प्रगट होत है, ताते शुद्ध चित्त वाले सन्यासिन को श्रीराम राम जप ध्यान करना उचित है और सब अभ्यास त्यागि के ॥६६॥

प्रमादादपि श्रीरामनाम उच्चरितं जनैः ।
भस्मीभवन्ति पापानि रोगानीव रसायनैः ॥६७॥

जो भूलि के सुधि बिना भी श्रीरामनाम जौन जन उच्चारन करते हैं तिनके सब पाप शीघ्र नष्ट हो जाते हैं, जैसे श्रेष्ठ रसायन औषधि से रोग समूह नष्ट हो जाते हैं ॥६७॥

तदेव लग्नं सुदिनं तदेवताराबलं चन्द्रबलं तदेव ।
विद्याबलं दैवबलं तदेव सीतापतेर्नाम यदा स्मरामि६८

सोई दिन लगन, मुहूर्त्त, तारा का बल, चन्द्रमा का बल, विद्या प्रारब्धादिक उत्तम सब सगुन उसी समय जानना जिस समय श्रीसीतारामनाम का उच्चारन होय। श्रीनाम सम्बन्ध बिना अमंगल रूप है ॥६८॥

सर्वाभिलाषं पूर्णार्थं जपेन्नामपरात्परम् ।
सर्वं त्यक्त्वा ततो याति ह्यवश्यं पदमव्ययम् ॥६९॥

समस्त मनोरथ के पूरन निमित्त सर्वोपरि श्रीरामनाम ही उच्चारन करे और सब साधनन का त्यागि करिके तौ अवश्य परमोत्तम अविनाशी धाम को प्राप्त होय, संशय नहीं है ॥६९॥

कात्यायन सहितायाम्

नाम संकीर्त्तनाज्जातं पुण्यं नोपचयन्ति ये ।
नाना व्याधि समायुक्ताः शत जन्मसु ते नराः ॥७०॥

कात्यायन मुनि की संहिता में कहा है—जौन जन श्रीराम-नाम जप संबंधी सुकृत समूह को संचय नहीं करते हैं सो हजारों

रोगन से पीड़ित रहेंगे ॥७०॥

अर्थवादं परे नाम्नि भावयन्तीह यो नरः ।
स पापिष्ठो मनुष्याणां निरये पतति ध्रुवम् ॥७१॥

श्रीरामनाम परात्पर परत्व में जो प्रशंशा रूप कुतर्क करते हैं, सांच नहीं मानते सो सब पापिन में महा अधमाधम हैं, शरीर रहते ही नरक रूप हैं; शरीर छूटे पीछे अवश्य महाघोर कुण्डन में जायगा ॥७१॥

श्रीरामनाममाहात्म्यं याथार्थ्यं श्रुति संमतम् ।
कुतर्कं ये प्रकुर्वन्ति तेऽधमाः पापयोनयः ॥७२॥

श्रीरामनाम माहात्म्य यथार्थ सर्व श्रुतिसंमत है तिनमें कुतर्क करना महापाप है सत्य सत्य जानोगे, दृढ़ प्रतीति समेत नामाराधन करोगे ॥७२॥

रामरामेति रामेति प्रत्यहं वक्ति यो नरः ।
सम्यक् पूजायुतं पुण्यं तीर्थकोटि फलं लभेत ॥७३॥

श्रीराम राम राम सब दिन सनेह समेत जौन जन कहते हैं तिनको कोटिन तीर्थ पूजा यज्ञादिकन का फल प्राप्त होता है श्रीरामनाम का फल सकल से श्रेष्ठ है ॥७३॥

यस्तु पुत्रः शुचिर्दक्षः पूर्वे वयसि धार्मिकः ।
रामनाम परं नित्यं तत्पुत्रं कवयो विदुः ॥७४॥

जो पुत्र पवित्र प्रवीन प्रथम अवस्था में धर्म तत्पर है औ सर्वदा श्रीरामनाम परायन है सोई सांचा पुत्र है सन्त सज्जन कहते हैं, बाकी सब मल मूत्र सम है ॥७४।

वैश्वानर संहितायाम्

न देशकालनियमो न शौचाशौचनिर्णयः ।

विद्यते कुत्रचिन्नैव रामनाम्नि परे शुचौ ॥७५॥

श्रीवैश्वानर संहिता में कहा है—श्रीरामनाम उच्चारन में उत्तम काल, शुचि अशुचि का नेम नहीं है। सर्वदा सकल ठौर सब जीवन मात्र को श्रीरामनाम रटन का अधिकार है। श्रीरामनाम महापावन गरीब नेवाज हैं, इनको कुछ अपेक्षा नहीं है काहू साधन की। ऐसे श्रीरामनाम से जीव विमुख महाकष्ट साधनन कमावते हैं, महामूढ़ हैं ॥७५॥

रामेति नित्यं यो भक्त्या ब्रूयाद्रात्रिदिवं नरः।
महापातककोटिभ्यो मुक्तः पूतो भवेत्त सः ॥७६॥

श्रीराम राम राम जौन जन सनेह समेत सदा कहते हैं दिन-राति जिनकी जिह्वा श्रीरामनाम महासुधारस चाखती है, उनके अनन्त महापापन के ढेर छूटि जाते हैं, परम पवित्र होके परम धाम पधारते हैं ॥७६॥

रामनामात्मकं मन्त्रं सततं कीर्त्तयन्ति ये।
सर्वरोगविनिर्मुक्तो मुक्तिमाप्नोति दुर्लभाम् ॥७७॥

श्रीरामनाममय मनि शिरोमनि जो श्रद्धा समेत सदा संकीर्त्तन करते हैं भीतर बाहर के रोग शोक उनके दूर हो जाते हैं औ उह परम दुर्ल्लभ मोक्ष को पावते हैं ॥७७॥

म्लेच्छतुल्याः कुलीनास्ते ये न भक्ता रघूत्तमे।
संकीर्णयोनयः पूता नामगृह्णन्ति ये सदा ॥७८॥

श्रीसीताराम महामोदधाम नाम में जिसकी प्रीति नहीं है सो महा उत्तम कुलीन भी महाचांडाल म्लेच्छ से बुरा है; सो नीच जाति है, सब भाँति शरीर से अपावन है औ श्रीरामनाम में तत्पर है सो महा पुनीत पावन हैं ॥७८॥

नास्ति नास्ति महाभाग कलेर्युगसमं युगम्।
स्मरणात् कीर्त्तनाद्यत्र लभते परमं पदम् ॥७९॥

कलियुग सम और युग नहीं है। जिस कलिकाल में केवल स्मरन संकीर्त्तन से परम पद श्रम बिना प्राप्त होता है ॥७९॥

वात्स्यायन संहितायाम्

तुला पुरुष दानानि दत्त्वा यत्फलमश्नुते ।
तस्मादसंख्यगुणितं रामनाम्नापि संलभेत ॥८०॥

वात्स्यायन संहिता में कहा है—अपने बराबर तौलि के जो सुबरन मुक्तामनि देते हैं और मनुष्यन का दान करते हैं तिनसे अनंत गुन फल अधिक श्रीरामनाम एकबार उच्चारन से होताहै।८०

स्त्रीराजबालहा चैव यश्च विश्वासघातकः ।
सर्वोपहारी पापिष्ठो मार्गघ्नो ग्रामदाहकः ॥८१॥

स्त्री, राजा, बालक को जो मारते हैं तथा सर्वदा विश्वासघातक हैं सबका सर्वस हरि लेते हैं, महापापी हैं, राह लूटते हैं, गांव फूँक देते हैं ॥८१॥

मातृगामी सुरापश्च भूतध्रुक् सर्वनिन्दकः ।
मातृहा पितृहा चैव भ्रूणहागुरुतल्पगः ॥८२॥

माता के साथ रति करते हैं मदिरा पान करते हैं सबके द्रोही सबके निन्दक हैं, माता-पिता के घातक हैं, गर्भपात करवाते हैं, गुरुशय्या पर चढ़ते हैं ॥८२॥

ये चान्ये चैव पापिष्ठा महापापयुताश्च ये।
सर्वपापैः प्रमुच्यन्ते रामनाम्नस्तु कीर्त्तनात् ॥८३॥

यह सब पापी तथा और अनन्त पाप समेत होय परन्तु श्रीरामनाम पावन धाम का उच्चारन स्मरन श्रवन सम्बन्ध से परम

पावन पद पाय जाता है संशय बिना ॥८३॥

हेमभारसहस्रैश्च कुरुक्षेत्रे रविग्रहे ।
गजाश्वरथदानैश्च देवालय प्रतिष्ठया ॥८४॥

हजारों मन सोना, मनि, मुक्ता, हाथी, घोड़ा, रथ, पालकी मनुष्य जो सूर्य्य ग्रहन में कुरुक्षेत्र में दान करता है, देवतन का मन्दिर बनाय के प्रतिष्ठा बिधि समेत कोटिन बार करता है।८४

सेवनैः सर्वतीर्थानां तपोभिर्विविधैश्च किम् ।
श्रीरामनाम्नि सततं नित्यं यस्यास्ति निश्चयम् ॥८५॥

क्षेत्र, तीर्थ, तप, यज्ञादिक कर्म करने से तिनको कौन काम है जिनका दृढ़ निश्चय समेत श्रीरामनाम में सांची प्रीति है तिन्होंने सब कुछ कर लिया उनको कुछ कृत्य करने को रह न गया ॥८५॥

घोरे कलियुगे प्राप्ते सर्वदोषैकभाजने ।
रामनामरता जीवास्ते कृतार्थाः सुजीविनः ॥८६॥

महाघोर कलियुग सब दोषन का घर है, उसमें जो श्रीरामनाम रत हैं जीव, सोई कृतार्थ होयँगे और नहीं सत्य जानना, जीवना उन्हीं का सफल है ॥८६॥

रामनामपरा ये च घोरे कलियुगे द्विजाः ।
त एव कृतकृत्याश्च न कलिबाधते हि तान् ॥८७॥

श्रीरामनाम में सब साधन छोड़िके तत्पर हैं सोई कठिन कलिकाल कराल में कृतार्थ होयँगे और नहीं। कलियुग की बाधा उनको कुछ नहीं लगेगी ॥८७॥

समस्तजगदाधार मर्गेश्वरमखण्डितम् ।

रामनाम कलौ नित्यं ये जपन्ति समादरात ॥८८॥

सब विश्व के आश्रय सबके ईश्वर अखण्ड सच्चिदानन्द श्रीरामनाम को जो जप करते हैं सनेह आदर समेत ॥८८॥

ते धन्याः पूजनीयाश्च तेषां नास्ति भयं क्वचित् ।
सत्यं वदामि विप्रेन्द्र ! नान्यथा वचनं मम ॥८९॥

सो धन्यन महाधन्य पूजनीय कलियुग में हैं । उनको किसी का भय नहीं कहीं रहे सत्य सत्य सत्य मेरे वचन को मानना श्रीरामनाम अखण्ड जपना ॥८९॥

महाशम्भु संहितायां श्रीशिववाक्यम्

यत्र कुत्राशुभे देशे भवेद्रामानुकीर्त्तनम् ।
सर्वं तीर्थाधिकं विद्धि महाघौघ हरं हि तत् ॥९०॥

महाशंभु संहिता में श्रीशंकर का वाक्य है—चाहे जौन महा-अपावन देशमें श्रीरामनाम उच्चारन होय सो अनन्त तीर्थन से श्रेष्ठ है । महाअघपुञ्जन को नाशक उह स्थान सुखखानि है ॥९०॥

श्रीरामनामाखिलमन्त्रबीजं
सञ्जीवनं चेत् हृदये प्रविष्टम् ।
हालाहलं वा प्रलयानलं वा
मृत्योर्मुखं वा विशतां कुतो भीः ॥९१॥

श्रीरामनाम समस्त मंत्रन के बीज हैं, परम संजीवन मूरि हैं । जो कदाचित् संत सतगुरु कृपा से हृदय में प्रवेश करि जाय तौ महा कालकूट, महाप्रलय को पावक, महामृत्यु के मुख प्रवेश करे, तौ भी वाको रंचक भय खेद न होयगो श्रीनाम महामहिमा प्रताप से ॥९१॥

तत्रैव श्रीजानकीवचनं श्रीरामं प्रति

प्रणवं केचिदाहुर्वै बीजं श्रेष्ठं तथा पर ।
तत्तु ते नाम वर्णाभ्यां सिद्धिमाप्नोति मे मतम् ॥९२॥

उसी स्थान में श्रीजानकी जी का विशद वचन श्रीराम प्राण प्रिय से हैं-कोई ॐकार को कोई एकाक्षर बीज को श्रेष्ठ कहते हैं, सो दोनों मन्त्र आपके नाम दोऊ वरन के अंश से सिद्ध होत है ॥९२॥

रामेति नाममात्रस्य प्रभावमतिदुर्गमम् ।
मृगयन्ति तु तद्वेदाः कुतो मन्त्रस्य ते प्रभो ॥९३॥

श्रीरामनाम का प्रभाव सर्वोपरि परम गंभीर दुःप्राप्य है समस्त वेद खोजते हैं, परन्तु श्रीरामनाम महिमा का पार नहीं पावते हैं। औ जब श्रीरामनाम मन्त्ररूप होय के वर्त्तमान, होय तब कौन की शक्ति है के किञ्चित् कथन करि सके। हे स्वामिन्। आपका नाम अकथ है। ९३॥

रामनाम प्रभावेण स्वयंभूः सृजते जगत् ।
विभर्ति सकल विष्णुः शिवः संहरते पुनः ॥९४॥

श्रीरामनाम के प्रभाव शक्ति से ब्रह्मा, विष्णु, शिव उत्पत्ति. स्थित, संहार करते हैं और जो कहे सो झूठ है ॥९४॥

पतञ्जलि सहितायाम्

पृथ्वीशस्यसम्पूर्णा दत्त्वा यत्फलमश्नुते ।
रामनाम सकृज्जप्त्वा ततोऽनन्तगुणं फलम् ॥९५॥

पतंजलि मुनि की संहिता में कहा है—सब भूमि खेत से पूरन उत्तम ब्राह्मन को देय के जो फल होता है सो फल श्रीरामनाम एकबार कहे होता है ॥९५॥

रामेति नाम परमं मन्त्राणां बीजमव्ययम् ।

ये कीर्त्तयन्ति सततं तेषां किञ्चिन्न दुर्लभम् ॥६६॥

श्रीरामनाम परमोत्तम सकल मंत्रन के कारन शक्तिप्रद हैं। जौन जन सनेह समेत सदा संकीर्त्तन उच्चारन करते हैं तिनको कोई पदार्थ दुर्ल्लभ नहीं है। श्रीराम एक रस अविनाशी उनको सब सुख देते हैं ॥६६॥

रामनाम परब्रह्म त्यक्त्वा वात्सल्यसागरम् ।
अन्यथा शरणंनास्ति सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥९७॥

श्रीरामनाम परब्रह्मरूप कृपा करुना वात्सल्यादि गुन सागर तिनको त्यागि के और जीवन के रक्षा करने वाला कोई नहीं। श्रीरामनाम अपने भक्तन का दोष देखते ही नहीं हैं सत्य सत्य मेरा वचन है ॥६७॥

नाम संकीर्त्तनादेव सम्पूर्णफलदायकम् ।
अन्यत् फल्गु फलं सर्वं मोक्षावधिमसंशयम् ॥९८॥

श्रीरामनाम उच्चारन से सम्पूर्ण फल प्राप्त होता है और सब साधन से तुच्छ फल प्राप्त होता है। चाहे मोक्ष भी होय तौ भी परमानन्द रस से लघु है ॥६८॥

कलौ युगे राघवनामतत्सदा
परं पदं यात्यनयासतोध्रुवम् ।
सर्वैर्युगैः पूजितमुन्नतं युगं
समस्तकल्याणनिकेतनं वरम् ॥६६॥

कलियुग में संशय रहित श्रीराघवेश नाम रटने से श्रम बिना निश्चय समुझो सामान्य जीव भी परम पद जायँगे। सब युगन से श्रेष्ठ युग परम उत्तम है, श्रीरामनाम उच्चारन मात्र से जीव कृतार्थ होते हैं ॥६६॥

माङ्गल्यं सर्वपापघ्नमायुष्यमखिलेष्टदम् ।
मुक्ति भक्तिप्रदं पुण्यं रामनाम्नस्तु कीर्त्तनम्॥१००॥

महा मंगलमय सकल पाप नाशक, आयुष्य वरधन, समस्त मनोरथप्रद, भुक्ति, मुक्ति, भक्ति, प्रदायक श्रीरामनाम है निरंतर नामोच्चारन करना सार है ॥१००॥

येऽहर्निशं जगद्धातुः रामनाम्नस्तु कीर्त्तनम् ।
कुर्वन्ति तान् नरव्याघ्र न कलिर्बाधते क्वचित् ॥१०१॥

सब विश्व के पालक धारक श्रीरामनाम को जो दिन राति सनेह समेत लेते रहते हैं हे मनुष्य श्रेष्ठ ! तिन जनों को कलियुग की बाधा कदाचित् नहीं हो सकती है, उनसे सब डरते हैं ॥१०१

शमायालं जलं वह्नेस्तमसो भास्करोदयः ।
शान्तिः कलेरघौघस्य नामसंकीर्त्तनं वरम् ॥१०२॥

अग्नि के शांति करने को जल समर्थ है औ तम समूह के शान्ति करने को सूर्य्य परम श्रेष्ठ है तैसे ही श्रीरामनाम सब कलिकाल कराल के ताप पाप को नाश करनेहारे हैं। श्रीरामनाम उच्चारन करने में आलस करना महा अनुचित है ॥१०२॥

नामसंकीर्त्तनं तेन क्षुत्तृट् संस्खलनादिषु ।
यः करोति महाभाग तेन तुष्यति राघवः ॥१०३॥

क्षुधा तृषा के दुःखसे तथा गिरने समय तैसे ही काहू भांति जो श्रीरामनाम उच्चारन करता है तिन पर श्रीराघव परात्परेश परम प्रसन्न हो जाते हैं ॥१०३॥

वैशम्पायन संहितायाम्

सर्वधर्मबहिर्भूतः सर्वपापयुतस्तथा ।
मुच्यते नात्र संदेहो रामनामानुकीर्त्तनात् ॥१०४॥

वैशम्पायन संहिता में कहा है—जौन जन सकल धर्म से रहित तथा सब पापन के सहित होय सो भी श्रीरामनाम संकीर्त्तन स्मरन उच्चारन करने से पाप रहित होय के कृतार्थ हो जाता है १०४

ब्रवीमि वाक्यं श्रुतिशास्त्रसारं
श्रृण्वन्तु तत्सर्वजनाः पवित्रम् ।
रामेति वर्णद्वयमादरेण
जपन्तु सर्वैर्मुनिभिः प्रदिष्टम् ॥१०५॥

हम वचन सकल श्रुति शास्त्र पुरान का सार कहते हैं, सब कोई सावधान होय के श्रवन करो परम पवित्र वाक्य है सब मुनिन से सिद्धान्त करके कहा हुआ श्रीरामनाम दोऊ वरन मनहरन आदर समेत जपो; याही में भलाई है और सब धोखा है, इह श्रीव्यास जी का वचन है ॥१०५॥

नामनाम जपादेव महापातक कोटयः ।
विनश्यन्ति महाभाग अनायासेन तत्क्षणात् ॥१०६॥

रामनाम के जप से महापातक कोटिन श्रमबिना बिनाश हो जाते हैं विलम्ब नहीं लगता है। हे महाभाग ! श्रीरामनाम का बड़ा प्रताप है ॥ १०६ ॥

जीवनं रामभक्तस्य वरं पञ्चदिनादि च ।
न तु नाम विहीनस्य कल्पकोटिशतानि च १०७॥

श्रीरामनामानुरागिन का जीवना पाँच दिन बहुत है औ श्रीरामनाम सनेह बिना जो कोटिन कल्प तक जीवे तौ बृथा है, सौभागिनी का जीवना थोरा ही बहुत है ॥१०७॥

वारांनिधौ पततु गच्छतु वा हुताशं
बन्ध्याऽथवा भवतु तज्जननी खरारेः ।

भक्तिर्न यस्य विमलेश्वरनाम्नि शुद्धं
जीवच्छवो जगति गर्हित कर्मकर्ता ॥१०८॥

समुद्र में गिरि पड़े तौ भला है, आग में जले तौ उत्तम है। उसकी माता बांझ होती तौ भला था, जीवते ही मृतक रूप उह मनुष्य है जिसकी प्रीति श्रीअयोध्यानायक महाराज के नाम गुनादिक में नहीं, सो बृथा जन्म लिया है महा निन्दित कर्म करता है ॥६०८॥

गर्गीय संहितायां धर्मराजवाक्यम् दूतान् प्रति

दूताः शृणुध्वं मम शासनं ध्रुवं
सदैव माङ्गल्यकरं सुखावहम् ।
स्मरन्ति ये राघव निर्मलं
न तत्र यात्रा भवती शुभावहा ॥१०९॥

गर्गमुनि की संहिता में श्रीधर्मराज वचन दूतन प्रति उपदेश है– हे दूतों ! मेरी आज्ञा श्रवण करो महामंगल रूप सकल सुखदायिनी है जौन जन किसी प्रकार से श्रीरामनाम स्मरन करे. तहां तुम कदाचित् न जाना भूलिके ॥६०६।

साङ्केतरीत्याथ भयेन क्लेशा
दन्तेऽपि श्रीराममुदाहरन्ति ।
ते पुण्यभाजो मनुजा महात्मका
न तत्र यात्रा भवती शुभावहा॥११०॥

संकेतिक नाम और उसको कोई पुकारे तौ भी श्रीमहाराज उसके पाप दूरि करि देते हैं। भय क्लेश ते जो नाम अन्त में कहै सो महासुकृती है, उनके समीप कदाचित् न जाना जो जावोगे तो दुःख पावोगे ॥११०॥

वयं सदा नाम सुहृद्गुणे रताः
तदैव तज्जापकपादसेवकाः ।
प्रभावतो यस्य हरीश ब्रह्मा
बिभर्ति विश्व सलयं ससम्भवम् ॥१११॥

श्रीधर्मराज जी कहते हैं—हे दूतों ! तुम सावधान होय के सुनो—हम सब श्रीरामनाम सनेहिन के गुन को कहते रहते हैं । श्रीरामनाम जापकन के चरन सेवक हैं । देखो ऐसे महात्मा ईश्वर सम सो श्रीरामनाम जापकन को पूजते हैं, औरन की कौन कथा है । श्रीरामनाम प्रभाव से ब्रह्मा, विष्णु, शिव संभव, पालन संहार करते हैं ।।१११॥

तस्मात् प्रमादमुत्सृज्य दूरतः किङ्करास्सदा ।
श्रीरामनामसम्पन्ने गृहे गच्छतु नैव हि ॥११२॥

ताते असावधानता त्यागि के किंकरों ! श्रीरामनाम संबंधी घर को दूर ही से छोड़ देना कदाचित् उहां न जाना । उह साक्षात् मेरे स्वामी का गृह है ।।११२॥

कर्त्तव्यं वाक्यमाकर्ण्यस्वामिनो मम साम्प्रतम् ।
धार्यं ध्रुवं प्रयत्नेन महामोहैक नाशनम् ॥११३॥

हम जो तुम्हारे मालिक हैं मेरी बात सुनिके सांच-सांच हृदय में धारन करना, महामोह का नाशक वचन है ।।११३।।

बृहद्वशिष्ठसंहितायां श्रीवशिष्ठवाक्यं राजकुमार प्रति

हित्वा सकलपापानि लब्ध्वा सुकृत सञ्चयम् ।
स पूतो जायते धीमान् रामनामानुकीर्त्तनात् ॥११४॥

बृहद्वशिष्ठ संहिता में श्रीवशिष्ठ वाक्य कोई राजपुत्र से है सब पापन को छोड़ि के, सकल सुकृत को पाय के महा पवित्र होय

के श्रीरामधाम जाता है, श्रीरामनाम जापक थोरे श्रम से ॥११४

राम रामेति रामेति कीर्त्तयच्छुद्धचेतसा ।
राजसूयसहस्राणां फलं प्राप्नोति मानवः ॥११५॥

श्रीरामनाम शुद्ध चित्त होय के जो उच्चारन करता है, तिस महात्मा को कोटिन राजसूय यज्ञ का फल प्राप्त होता है, यह सब सामान्य फल हैं, श्रीरामनाम की गति अकथ है। ११५॥

तत्रैव श्रीनारदवाक्यं मुनीन् प्रति

एकतः सर्वतीर्थानि जलं चैव प्रयागजम् ।
श्रीरामनाम माहात्म्यं कला नार्हति षोडशीम् ॥११६॥

उसी स्थल में श्रीनारद जी का वचन मुनीश्वरन प्रति है– एक ओर तराजू पर सब तीर्थ तथा श्रीप्रयागराज का जल और एक तरफ किंचित् श्रीरामनाम की महिमा तौ भी सम न हो सकेगो ॥ ११६ ॥

अन्धानां नेत्रमुत्कृष्टं स्वच्छं श्रीनाम मङ्गलम् ।
बधिराणां तथा कर्णं पङ्गूनां हस्तपादकम् ॥११७॥

भीतर बाहर के जितने अन्धे हैं और दोनों तरफ के बहरे हैं तिन सबन को परम सुन्दर नेत्र उज्जवल परमप्रकाशमान श्रवन सुख भवन हैं। महामंगलमय श्रीरामनाम हैं लँगड़े लूले दोनों प्रकार के तिनके सुखदायक परम पुष्ट हाथ पांव है। तात्पर्य इह है के बड़े गरीब निवाज हैं। इन्हींके शरन होना परम योग्य है।११७

आश्रमः सर्वजन्तूनामाधारहितात्मनाम् ।
जननी तातवन्नित्यं पोषकं सर्वदेहिनाम् ॥११८॥

गालवीय संहितायाम

गालव मुनि की सहिता में कहा है–श्रीरामनाम निराधारन

के आधार हैं माता-पिता से कोटिन गुन पालन पोषन करते हैं सब जीवन को ॥११८॥

सुदर्शन संहितायाम्

चातकानां चकोराणां मयूराणां तथा शुभम्।
लक्षणं दोषनिर्मुक्तं धार्यं श्रीनाम तत्परैः ॥११९॥

सुदर्शन संहिता में कहा है—चातक सम टेक, चकोर सम ध्यान, मयूर सम शब्द, श्रवण करना श्रीरामनाम तत्पर जापक को धारन करना चाहिये ॥११९॥

दुःखादिकं समं कृत्वा द्वन्द्वधर्मं विहाय च।
भजेन्निरामयं नाम चित्तमाकृष्य सर्वतः ॥१२०॥

दुःखादिक को सम करिके, मानापमान सहिके, सबसे चित्त रोकिके, जो रोग रहित श्रीरामनाम जपते हैं सो बड़भागीश्वर हैं ॥१२०॥

श्रीरामनाममात्रायामादौ चित्तस्य धारणा ।
कृत्वा पश्चात्सुधीर्ध्यानं रेफस्यैव विवेकतः ॥१२१॥

श्रीरामनाम के मात्रान में प्रथम अर्थ मनन समेत चित्त को लगावै, फेर सब मात्रन को अर्धमात्रा रेफ में लय करे औ श्री सीतारामरूप रेफ को बारम्बार ध्यान करे, विचार समेत ॥१२१॥

प्रणवादीनि मन्त्राणि रामनाम्नि समभ्यसेत् ।
यथा गुरूपदेशेन नित्यमेकाग्रमानसैः ॥१२२॥

ओंकारादि ही में विचार करे। श्रीरामनाम से भिन्न कुछ न जाने। जैसी रीति से श्रीगुरु महाराज अभ्यास करने कहैं तौने ही भांति से करे, एकान्त में मन लगाय के ॥१२२॥

एवं रीत्या जपेन्नाम तदा स्वल्पमुपागतः ।

जायते परमा सिद्धिर्विरक्तिर्भक्तिरुज्वला ॥१२३॥

या रीति से जो श्रीरामनाम का अभ्यास करते हैं तिनको परम सिद्धि इष्ट प्राप्ति रूप तथा यथार्थ स्वरूप बोध, सब मायिक पदार्थ से वैराग्य, पर रसरूपा भक्ति, महा उज्जवल सब सुख सहज ही में लाभ होता है श्रीरामनाम प्रताप से ॥१२३॥

शिव संहितायाम्

नारायणादि नामानि कीर्तितानि बहून्यपि।
सम्यग् भगवतस्तेषु रामनाम प्रकाशकम् ॥१२४॥

शिव संहिता में कहा है श्रीनारायन से आदि परमेश्वर के अनन्त नामन को कीर्त्तन कर, तिन सबन का प्रकाशक परात्पर श्रीरामनाम है। असंख्य नामन का फल देते हैं एकबार उच्चारन किये से ॥१२४॥

नारायणादि नामानि साकारैश्वर्यमुत्तमम्।
नित्य ब्रह्म निराकारमैश्वर्यं वै विभाति च ॥१२५॥

नारायन से लेकर के जेते नाम हैं सो सब साकार विभूतिमय हैं औ ब्रह्म निरीहादिक नाम व्यापक विभूति समेत हैं, एक रस हैं एक में दोनों गुन नहीं हैं ॥१२५॥

उभयैश्वर्यमान्नित्यो रामो दशरथात्मजः।
साकेते नित्यमाधुर्य्ये धाम्नि संराजते सदा॥१२६॥

श्रीराम परात्पर दाशरथी साकार निराकार दोनों विभूति सम्पन्न हैं एक रस साकेत महा माधुर्य्यमयधाम श्रीअयोध्याजी तिन में सपरिकर विराजमान हैं ॥१२६॥

रामनाम परं तत्त्वं द्वयोः कारणमुज्ज्वलम्।
तस्य संस्मरणादेव साक्षाद्रामालयं व्रजेत् ॥१२७॥

श्रीरामनाम परात्पर तत्त्व साकार निराकार दोनों के कारन हैं। परम निर्मल हैं, जिनके श्रीनाम स्मरन से साक्षात् श्रीराम धाम में जन जाते हैं ॥१२७॥

नाम स्मरणमात्रेण नामी सन्मुखतां लभेत्।
तस्माच्छ्रीरामनाम्नस्तु कीर्त्तनं सर्वदोचितम् ॥१२८॥

श्रीरामनाम स्मरण मात्र से श्रीराम सच्चिदानन्द द्विभुज परात्पर साक्षात्कार हो जाते हैं। उच्चारनमात्र से सन्मुख हो जाते हैं, ताते सब भरोसा त्यागि के श्रीरामनाम परायन होना चाहिए ॥१२८॥

रा शब्दस्तु परं ब्रह्म वाचकत्वेन बोधितः।
मकारस्तु परा शक्तिस्सर्वशक्त्याभिवन्दिता ॥१२६॥

रकार दीर्घ परमब्रह्म श्रीराम वाचक है औ मकार सर्वशक्ति वन्दित पराशक्ति। सब पदार्थ इनहीं के अन्तर हैं ॥१२६॥

लोमश संहितायाम्

न सोऽस्तु प्रत्ययो लोके यश्च श्रीराम नामतः।
भिन्न प्रतीयते विप्र! सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥१३०॥

लोमश संहिता में कहा है—ऐसा शब्द अर्थ कोई नहीं जो श्रीरामनाम से भिन्न प्रतीत होय। अभिप्राय इह है कि श्रीरामांश से सब सिद्धि है, सत्य सत्य हम कहते हैं ॥१३०॥

लौकिकाः वैदिकाः सर्वे शब्दाः श्रीरामनामतः।
समुद्भवन्ति लीयन्ते काले काले न संशयः ॥१३१॥

जेते लोक वेद में शब्द हैं सो सब श्रीरामनाम के अंश से सिद्ध समुझना चाहिए। समय पायके उत्पत्ति लय श्रीरामनाम में सब शब्दन का है ॥१३१॥

यथा भुशुण्डिशब्देन पलायन्ते खगा मुने।

तरुं विहाय वै तद्वद्राम नाम्ना दुराशयाः ॥१३२॥

जैसे बन्दूक के शब्द सुनिके पंछी सब बृत्तन को त्यागि के उड़ि जाते हैं तैसे ही श्रीरामनाम ध्वनि सुनि के शरीर के सब पाप विनष्ट हो जाते हैं ॥१३२

यथा चिन्तामणेस्स्पर्शाद्दारिद्र्यं याति संत्तयम् ।
तथा श्रीराम नाम्ना वै मोहजालमसंशयम् ॥१३३

जैसे चिन्तामनि के स्पर्श से दरिद्रता नष्ट हो जाती है तथा श्रीरामनाम सम्बन्ध से मोहजाल विनाश हो जाता है संशय बिना ॥१३३॥

रामेति द्व्यत्तरं नाम मानभङ्गपिनाकिनः ।
अभेदो बाध्यते तेन सततं नाम नामिनोः ॥१३४

श्रीराम दो बरन धनुषभंग करने के सम्बन्ध से शिव जी का मान भंग किया, ताही से नाम नामी अभेद जानना चाहिए। धनुषभंग श्रीराममूर्ति ने किया औ इहां नाम लिखते हैं ताते अभेद हुआ ॥१३४॥

तत्रैव लोमश वाक्यम्

एकदा मनुयः सर्वे शौनकाद्या बहुश्रुताः ।
नैमिषे सूतमासीनं पप्रच्छुरिदमादरात् ॥१३५॥

उसी स्थान में श्रीलोमश मुनि का वचन है—एक काल में अट्ठासी हजार मुनीश्वर शौनकादिक बड़े विज्ञ शिरोमनि नैमिषारण्य में सूत पौराणिक को सुख समेत बैठे देख के पूछते भये आदर समेत, जैसी रीति बड़ेन से प्रश्न करने की है, वैसे ही करत भये ॥१३५॥

अज्ञानध्वान्तविध्वंसोऽनन्त कोटि समप्रभः ।

कथितो भवता पूर्वं तद्वदस्व महामते ॥१३६॥

अज्ञानतम विध्वंस के अर्थ अनन्त कोटि सम-प्रभा अपने पूर्व ही श्रीरामनाम में कहा था। तिनका स्वरूप यथार्थ अब वरनन करिये कृपा करके ॥१३६॥

श्रीसूत उवाच

शृणुध्वं मुनयः सर्वे रहस्यं परमाद्भुतम् ।
पार्वती शिव संवादं चतुर्वर्गप्रदायकम् ॥१३७॥

श्रीसूतजी उत्तर देते हैं—हे मुनियों में श्रेष्ठ ! आप सब श्रवन करो, परम रहस्य श्रीराम परमात्मा का हम कहते हैं। श्री शिव पार्वती सम्वाद है चारों फलदायक है ॥१३७॥

कैलाशशिखरासीनं देवदेवं जगद्गुरुम् ।
लोकानां च हितार्थाय पप्रच्छ नगकन्यका ॥१३८॥

कैलाश पर्वत पर सुख समेत गौरीश्वर जगद्गुरु बैठे थे, उसी समय में लोकन के कल्यान निमित्त श्रीपार्वती जी ने प्रश्न किया सो सुनो १३८॥

पार्वत्युवाच

देव देव महादेव सर्वज्ञ परमेश्वरः ।
त्वत्तः श्रुतं मया पूर्वं मन्त्रतन्त्राद्यनेकधा ॥१३९॥

श्रीपार्वती जी पूछती हैं—हे देवता के स्वामी ! सर्वज्ञ परमेश्वर !! आपसे हमने अनन्त मंत्र तंत्र पूर्व ही नाना प्रकार से सुना है ॥१३९॥

सर्वधर्माणि जीवानां व्यवहाराणि यानि च ।
इदानीं श्रोतुमिच्छामि किं तत्त्वं कृतनिश्चितम् ॥१४०

जीवन के वर्णाश्रम धर्म तथा राजादिकन का व्यवहार सुना ॥

अब जौन परम तत्त्व आपने भलीभांति निश्चय करिके निर्णय किया होय सो कहिये ॥१४०॥

गुह्याद् गुह्यतरं गुह्यं पवित्रं परमं च यत् ।
सुलभं सुगमोपायं विनायासेन सिद्धिदम् ॥१४१॥

जौन तत्त्व गुप्त मे गुप्त, परम पवित्र, महामोद मन्दिर होय, सुलभ से सुलभ, सबको सहज प्राप्त होने लायक श्रम बिना सो कृपा करिके कहिये । जिस पदार्थ के धारन से सर्व सिद्धि प्राप्त होय, फिर संशय न रहि जाय, संशय की गांठि खुलि जाय सो रहस्य सुनाओ ॥१४१॥

शिव उवाच

धन्यासि कृतपुण्यासि यदि ते मतिरीदृशी ।
पृष्टं लोकोपकाराय तस्मात्त्वां प्रवदाम्यहम् ॥१४२॥

श्रीशंकर जी बोले हे प्रिये ! तुम धन्य से धन्य हौ जाते तुम्हारी मति परम आश्चर्य है जौन सिद्धांत लोकन के उपकार निमित्त आपने पूछा है सो हम कथन करते हैं ॥१४२॥

रहस्यं परमं प्रेष्ठं सर्वसिद्धिप्रदायकम् ।
रामनामपरं तत्त्वं सर्वशास्त्रेषु प्रस्फुटम् ॥१४३॥

श्रीरहस्य परम प्रिय तुम सर्वसिद्धि प्रदायक श्रवन करो । श्रीरामनाम ही परम तत्त्व सार श्रुति, शास्त्र, पुरानन में प्रगट है औ भ्रांति है ॥१४३॥

यस्य नामप्रभावेण सर्वज्ञोऽहं वरानने ।
रामनाम्नः परं तत्त्वं नास्ति किञ्चिज्जगत्त्रये ॥१४४

जौन श्रीरामनाम के प्रभाव शक्ति से हम सर्वज्ञ हैं, हे शिवे प्रान प्रिये ! श्रीरामनाम के परे और परम तत्त्व तीनों लोक में नहीं है ॥१४४॥

रामभद्रं परित्यज्य योऽन्यदेवमुपासते ।
कुम्भीपाके महाघोरे पच्यते नात्र संशयः ॥१४५॥

श्रीरामभद्र को त्यागि के जौन मूढ़ और देवतन की उपासना करता है सो अवश्यमेव महाघोर कुम्भीपाक नरक में जायके कोटिन युग लौं कच्चे घट के सदृश पकेगा ॥१४५॥

अज्ञानादथवा ज्ञानाद्रामेति ह्यक्षरं वदेत् ।
जन्मकोटिकृतं पापं नाशमायाति तत्क्षणात् ॥१४६

जानिके अथवा विना जाने जौन जन श्रीराम दोऊ वरनराज उच्चारन करते हैं तिनके अनन्त जन्म के पाप शीघ्र ही विनाश हो जाते हैं ॥१४६॥

यज्ञदानतपस्तीर्थस्वाध्यायाध्यात्मबोधतः ।
कोटि संख्यं रामनाम्नि पावित्र्यं वर्तते प्रिये ॥१४७॥

यज्ञ, दान, तप, तीर्थ, वेदाध्ययन, वेदांत बोध सबसे कोटिन गुना पवित्र श्रीरामनाम है ॥१४७

ततः कोटिगुणं पुण्यं सीतानाम सनातनम् ।
इति मत्वा भजन्त्येतान् मुनयो नारदादयः ॥१४८॥

तिससे कोटिन गुन फल सुख अधिक श्रीसीतानाम समेत से होता है ऐसा समुझि के श्रीनारदादिक सदा श्रीरामनाम जपते हैं ॥१४८॥

यावन्न कीर्तयेदस्या नाम कल्मषनाशनम् ।
अनन्तकोटिं जपतोऽपि न रामः फलसाधकः ॥१४९॥

जब तक श्रीजानकी जी का नाम समस्त मोद धाम सब पाप नाशक उच्चारन न करे तब तक अनन्त कोटि बार जपे तौ भी कृतार्थ न होयगा औ श्रीराम सकल मनोरथ दायक उस पर प्रसन्न

भी न होवेंगे ॥१४६॥

सीतया सहितं यत्र रामनाम प्रकीर्त्यते।
न तत्र नामदोषाणां प्रवृत्तिस्स्यात्कथंचन ॥१५०॥

श्रीसीता सहित जहां श्रीरामनाम उच्चारन होत है, तिस स्थान में दश नामापराधन नहीं हो सकता है कदाचित् ॥१५०॥

साङ्गाः सह रहस्याश्च पठिता वेदराशयः ।
कृताश्च सकलाः यज्ञाः येन रामेति कीर्त्तितम् ॥१५१॥

षडाङ्ग रहस्य समेत समस्त वेदन को जो पाठ करिके फल होता है, सब यज्ञन करिके जो फल सो सब उस बड़भागी को हो जाता है जिसने श्रीराम दो बरन श्रद्धा समेत उच्चारन किया, तिसको अनन्त फल मिलता है ॥१५१॥

रामेति द्व्यक्षरं नाम यत्र संकीर्त्यते बुधैः ।
तत्राविर्भूय भगवान् सर्वदुःखं विनाशयेत् ॥१५२॥

रामनाम दोनों अक्षर जहां सज्जन संकीर्त्तन करते हैं, तिस ठौर पर परमेश्वर प्रगट होय के उनके दुःख नाश करि डारते हैं १५२

अज्ञान तिमिरोद्भेदं कोटिसूर्येन्दुभास्वरम् ।
ज्ञानामृतपयोवाहं रामनाम सदा जपेत ॥१५३॥

अज्ञानरूप अँधेरे के नाश करने को कोटि सूर्य्य चन्द्र सम प्रकाशक हैं औ ज्ञानामृत के बरसाने को महा मेघ सम हैं ऐसे श्रीरामनाम को सदा जपना चाहिए ॥१५३॥

किं कार्यं वैदिकैः शब्दैः किंवा मन्त्रैश्चतान्त्रिकैः ।
किं कर्मणा च ज्ञानेन किमन्यैस्तपसाश्रमैः ॥१५४

वेद मन्त्र तथा तन्त्र मन्त्र नाना शब्द के समूह औ कर्म,

ज्ञान, तप, साधन समूह करने से कहा प्रयोजन है सकल भांति सुख दायक नाम जपो ॥१५४॥

स्मर्तव्यं रामनामैकं श्रोतव्यं चैव सर्वदा ।
पठितव्यं कीर्तितव्यं श्रद्धायुक्तैर्दिवानिशम् ॥१५५॥

श्रीरामनाम सुखधाम का स्मरन करो औ श्रीरामनाम ही का श्रवन करो, सदा पठन करो, कीर्तन करो, श्रद्धा समेत दिन-रात उठते, बैठते इसके सम प्रकाशक कोई अजपा नहीं है ॥१५५॥

विधिरुक्तं सदैवास्य न निषेधः क्वचिद्भवेत् ।
सर्वदेशे सर्वकाले सर्वैश्चनरजातिभिः ॥१५६॥

श्रीरामनाम का जपना सब श्रुति शास्त्र सम्मत है, निषेध कहीं नहीं है । सकल देश काल में सब जीवमात्र को अधिकार है ॥१५६॥

इदमेकं सदा कार्यं यदीच्छेच्छुभमात्मनः ।
चतुर्वर्गप्रदानेऽपि समर्थो रघुपुङ्गवः ॥१५७॥

श्रीरामनाम का स्मरन सर्वदा करना चाहिये, जो अपने आत्मा का कल्यान परम चाहते हो तौ अपर व्यर्थ है। श्रीरामनाम सकल मनोरथ के दायक हैं सकल भाँति से परम श्रेष्ठ है ॥१५७॥

ध्यानाज्ज्ञानाच्च सततं नाममात्रस्य कीर्त्तनात् ।
इत्युक्तं वः प्रियं सर्वं मया देवर्षिपुंगवाः ॥१५८॥

ज्ञान ध्यान से हजारों गुना श्रेष्ठ केवल श्रीरामनाम उच्चारनमात्र का फल है । हे ऋषिगनों ! यह रहस्य परम गम्भीर आप सबन को प्रियकारी हमने कहि सुनाया ॥१५८॥

नातोऽपि वदितव्यं स्याद्भवतां तत्त्वमीयुषाम् ।
सिद्धान्तः सर्वशास्त्राणां भवतां समुदाहृतम् ॥१५९॥

उसके आगे आप सबन को और तत्त्व जानिबे जोग नहीं है। सिद्धांत सब शास्त्रन का कहिके सुनाया है ॥१५६॥

इति ते कथितं देवि रहस्यं परमाद्भुतम् ।
गोपनीयं प्रयत्नेन येन श्रेयो ह्यवाप्स्यसि ॥१६०॥

हे देवि ! यह परम गुप्त रहस्य बड़े यतन से छुपाना चाहिये, आपको सकल सुख प्राप्त होयगा श्रीनाम सम्बन्ध से ॥१६०॥

पुलस्त्य संहितायाम्

कृष्णेति वासुदेवेति सन्ति नामान्यनेकशः ।
तेभ्यो रामेति यन्नाम प्राहुर्वेदाः परं मुने ॥१६१॥

पुलस्त्य संहिता में कहा है—कृष्ण, विष्णु, वासुदेवादिक जेते नाम हैं सबसे श्रेष्ठ परम प्रकाशक श्रीरामनाम है। समस्त वेद निरूपन करते हैं, हे मुनीश्वर जी ! ॥१६१॥

सर्ववेदाश्रयत्वाच्च सर्वलोकस्य कारणात् ।
ईश्वरप्रतिपाद्यत्वादखण्डब्रह्मवाचकः ॥१६२॥

सकल वेदन के आश्रय हेतु से औ सकल लोक के कारन होने से औ परब्रह्म प्रतिपादन हेतु से श्रीरामनाम अखण्ड ब्रह्म श्रीराम परात्परेश के वाचक हैं ॥१६२

शुक संहितायाम्

आकृष्टः कृतचेतसां सुमहतामुच्चाटनं चांहसामा-
चाण्डालममूकलोकसुलभो वश्यं च मुक्तिस्त्रियः ।
नो दीक्षां न च दक्षिणां न च पुरश्चर्यामनागीक्षते
मन्त्रोऽयं रसनास्पृगेव फलति श्रीरामनामात्मकः ॥१६३

श्रीशुक संहित। में कहा है—श्रीरामनाम जप से सब तन्त्रन के प्रयोग सिद्धि होते हैं जिनका चित्त कृतार्थ हो गया है ऐसे

महात्मन को आकर्षन श्रीरामनाम प्रताप से हो जाता है, अभिप्राय सब संत बस हो जाते हैं औ पापन का उच्चाटन हो जाता है मुक्ति रूप स्त्री वश हो जाती हैं तिनहीं में षट् प्रयोग अन्तरगत भये। श्रीरामनाम मन्त्र चांडाल पर्यंत रसना वाले जीवन को परम सुलभ है। श्रीरामनाम में दीक्षा नियम, पुरश्चरन का प्रयोजन नहीं है। किंचित भी श्रीरामनाम को कुछ न चाहिए, केवल रसना स्पर्श मात्र से फलीभूत होते हैं याही से बिलक्षन सब मन्त्रन से हैं ॥१६३॥

नायनाय यदृतेऽक्षराष्टकं पञ्चकं च न शिवाय यद्विना।
मुक्तिदं भवति यद्वयोर्वशात्तद्द्वयं वयमुपास्महे किल १६४

रा वरन राज सम्बन्ध विना नारायन अष्टाक्षर नाय नाय हो जाता है औ मकार सम्बन्ध बिना श्रीशंकर पञ्चाक्षर न शिवाय हो जाता है। श्रीराम दो वरन सम्बन्ध से दोनों मन्त्र सिद्धि होते हैं। ताते हम श्रीरामनाम की उपासना करते हैं ॥१६४॥

रामस्यातिप्रियं नाम रामेत्येव सनातनम् ।
दिवारात्रौ गृणन्नेषो भाति वृन्दावने स्थितः ॥१६५॥

श्रीराम का परात्पर नाम राम ही है, तिनहीं की दिन राति श्रीबृन्दवन में कृष्णचन्द्र जपते हैं सदा सनेह समेत ॥१६५॥

येषां रामः प्रियो नैव रामे न्यूनत्वदर्शिनाम् ।
द्रष्टव्यं न मुखं तेषां सङ्गतिस्तु कुतस्तराम् ॥१६६॥

जिनको श्रीरामनाम प्रिय नहीं है औ श्रीरामनाम में कम शक्ति देखते हैं अपनी महामूढ़ता से, तिनका जानिके मुख न देखना चाहिए संगति सम्भाषन की कौन कथा है। श्रीरामनामोपासक को यही उचित है ॥१६६॥

यन्नामवैभवं श्रुत्वा शंकराच्छुकजन्मना ।
साक्षादीश्वरतां प्राप्तः पूजितोऽहं मुनीश्वरैः ॥१६७॥

सुवा के शरीर में पूर्व ही जौन श्रीरामनाम के माहात्म्य को श्रीमहादेव जी के मुखारविन्द सुनिके गुनिके हम साक्षात् ईश्वर स्वरूप सब मुनीश्वरन करिके पूजित हो गये ॥१६७॥

नातःपरतरं वस्तु श्रुतिसिद्धान्तगोचरम् ।
दृष्टं श्रुतं मया क्वापि सत्यं सत्यं बचो मम ॥१६८॥

श्रीरामनाम से परे अन्य पदार्थ श्रुति सिद्धांत में नहीं है, औ हमने भी कहीं देखा सुना नहीं सत्य सत्य बचन हमारा है ।१६८

पद्म संहितायाम्

पठति सकलशास्त्रं वेदपारं गतो वा
यमनियम युतो वा वेदशास्त्रार्थकृद्वा ।
अपि च सकलतीर्थव्राजको वाहिताग्नि
र्नहिहृदि यदि रामस्सर्वमेतद्वृथा स्यात् ॥१६९॥

पद्मसंहिता में कहा है—समस्त वेद संहिता पुरानादिक पढ़ा होय, सब यम, नियम, साधन, तप तीर्थ, अग्निहोत्रादिक कर्म, समस्त वेद विधि, किये होय ऐसा सुकृती श्रीरामनाम सनेही न होय तौ उसका सब कर्त्तव्य वृथा कर्मरूप है ॥१६९॥

रूपस्यानुभवं दिव्यं परानन्दस्य सागरम् ।
रामनाम रसं दिव्यं पिब नित्यं सदाऽव्ययम् ॥१७०॥

श्रीरामरूप परानन्द सिन्धु परम दिव्य का अनुभव श्रीरामनाम सांचे सनेह से होयगा। ताते उचित है के श्रीरामनाम अविनाशी रस का सर्वदा पान करो सर्वाशा त्यागिके ॥१७०॥

रामनामरसानन्तसाधकं सु रसालयम् ।
स्मरणाद्रामभद्रस्य संकाशः तस्य संस्फुटम् ॥१७१॥

श्रीरामनाम अनन्त रस के दायक हैं, सब रसन के धाम हैं, श्रीरामनाम स्मरन से श्रीरामरूप का प्रकाश यथार्थ भीतर बाहर हो जाता है ॥१७१॥

रकाराज्जायते ब्रह्मा रकाराज्जायते हरिः ।
रकाराज्जायते शम्भुः रकारात्सर्वशक्तयः ॥१७२॥

रकार निर्विकार स्वरूप परमात्मा से ब्रह्मा, विष्णु, शिव, तथा अनन्त शक्ति, अनन्त ब्रह्मांड उत्पत्ति भये हैंऔ हो रहे हैं ॥१७२॥

आदावन्ते तथा मध्ये रकारेषु व्यवस्थितम् ।
विश्वं चराचरं सर्वमवकाशेन नित्यशः ॥१७३॥

सकल चराचर सावकाश समेत आदि, मध्य अन्त में रकार सुखसार में टिके हैं सर्वदा श्रीरकार से उन सबकी रक्षा है ॥१७३

अनन्त संहितायाम्

वने चरामो वसु चाहरामो
नदीस्तरामो न भयं स्मरामः ।
इत्थं वदन्तश्च वने किराताः
मुक्तिं गता रामपदानुषङ्गात् ॥१७४॥

अनन्त संहिता में कहा है—चार किरात महापातकी नदी तट में जाय के परस्पर सलाह करने लगे । एक ने कहा वन में विचरें, एक ने कहा धन हरें, एक ने कहा नदी तरें, एक ने कहा हमको भय नहीं, या रीति सों चारों पातकी उच्चारन करते हुये शरीर त्याग करते भये । चारों पद में श्रीरामनाम का सम्बन्ध पड़ा, ताही से परमधाम चारों जाते भये । आश्चय श्रीरामनाम

का माहात्म्य परत्व है ऐसे श्रीरामनाम को छोड़िके जो और स्थल में प्रेम करते हैं सो महामूढ़ हैं ॥१७४॥

सर्वैश्वर्यप्रदं सर्वं सिद्धिदं सर्वधर्मदम् ।
सर्वमोक्षकरं शुद्धं परानन्दस्य कारणम् ॥१७५॥

सब सुख, सब सिद्धि, सब धर्म, ऐश्वर्य, मोक्ष परमानन्द; सबके दायक परमकारन श्रीरामनाम हैं परमशुद्ध श्रीरामनाम है१७५

एकैक रामनामस्तु सर्वतापप्रणाशनम् ।
सहस्रनामकोटीनां फलदं वेदविश्रुतम् ॥१७६॥

एक एक श्रीरामनाम सकल ताप पाप हारक है । कोटिन सहस्रनाम सम अनन्त फलदायक है, वेद बीच विदित है ॥१७६॥

इमं मन्त्रं सदा स्नेहाद्ये जपन्तीह सादरम् ।
ते कृतार्थाः कलौदेवि अन्ये मायाविमोहिताः ॥१७७॥

श्री रामनाम महामन्त्र को आदर समेत जप करते हैं सोई कलियुग में कृतार्थ हैं औ श्रीनाम विमुख सब माया मोहित हैं उनका उद्धार न होगा ॥१७७॥

इमं मन्त्रं महेशानि जपेन्नित्यमहर्निशम् ।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो रामसायुज्यमाप्नुयात् ॥१७८॥

श्रीराननाम महामन्त्रराज हे प्रिये ! दिन-रात्रि जप करते हुए सब पाप से छूटिके श्रीपरात्पर रामचन्द्र स्वरूप में लीन हो जाता है अथवा अङ्गसंगी रहता है सर्वदा ॥१७८॥

सर्वेषां सिद्धिदं रामनाम सर्वत्र सर्वदा ।
यस्य संस्मरणाच्छीघ्रं फलमायाति दूरगम् ॥१७९॥

सब जीवमात्र को सब ठौर सदा सकल सिद्धि दायक श्रीराननाम है । जौन श्रीनाम सुमिरन से समस्त फल अति अमल

दुर्लभ भी प्राप्त हो जाता है संशय बिना ॥१७६॥

रामनाम्नः प्रभावेण स्वयम्भूः सृजते जगत् ।
तथैव सर्वदेवाश्च सर्वैश्वर्यसमन्विताः ॥१८०॥

श्रीरामनाम के प्रभाव से ब्रह्माजी सृष्टि करते हैं औ सब देवता परमैश्वर्य सम्पन्न होत भये ॥१८०॥

मार्कण्डेय संहितायाम्

अन्तःकरणसंशुद्धिर्नान्यसाधनतो भवेत् ।
कलौ श्रीरामनाम्नैव सर्वेषां सम्मतं परम् ॥१८१॥

मारकण्डेय संहिता में कहा है—मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार चारों अन्तःकरन श्रीरामनाम ही से परम शुद्धता पावते हैं, अन्य उपाय सब बृथा है। कलियुग में श्रीरामनाम का प्रबल प्रताप सकल श्रुति सन्त सम्मत है ॥१८१॥

आर्त्तानां जीवनं नित्यं दृप्तानां वै प्रमोददम् ।
भक्तानां त्राणकर्तारं रामनाम समाश्रये ॥१८२॥

दो प्रकार के भक्त हैं—एक आरत लोग तथा परमेश्वर अप्राप्तरूप कष्ट सहित। दोनों आरतन को रक्षाकरन पूर्वक परम जीवन हैं। औ दृप्त भक्त जौन परमेश्वर इच्छानुकूल हैं तिनको भी परम प्रमोद दायक है, औ सकल भक्तन को परम रक्षक हैं, ऐसे श्रीरामनाम का हम आश्रय करते हैं ॥१८२॥

कृपादिगुणसम्पन्नं सर्वदा शोकहारकम् ।
तारकं संसृतेर्नित्यं रामनाम भजाम्यहम् ॥१८३॥

कृपादिक अनन्तगुन सम्पन्न सकल शोकहारी संसृत सागर तारक सकल के ईश्वर श्रीरामनामका हम भजन स्मरन करते हैं १८३

चित्तस्य वासना सूक्ष्मा सर्वानन्दविनाशिनी ।

साऽपि श्रीरामसंलापादनायासेन नश्यति ॥१८४॥

चित्त की जो महीन अनादि काल की दुर्वासना है जिसके सम्बन्ध से जीव की प्रसन्नता परमेश्वर सम्बन्धी आनन्द का लेश नहीं रहा है। ऐसी कुवासना भी श्रीरामनाम संकीर्त्तन संस्मरन से थोरे श्रम में विनाश हो जाती है, श्रीरामनाम का प्रबल प्रताप है ॥१८४॥

रसना सर्पिणी प्रोक्ता संस्थिता बिलवन् मुखे ।
या न वक्ति सुधासारं रामनामपरात्परम् ॥१८५॥

तिस की रसना सांपिनी है मुखरूपी विल में बसि रही है जौन जिह्वा श्रीरामनाम सुधासागर में मग्न नहीं होती, वाद विवाद छोड़िके। श्रीरामनाम सर्वोपरि है ॥१८५॥

विवेकादीन् शुभाचारान् रक्षणाय सदोद्यतम् ।
श्रीरामेति सन्नाम परमानन्दविग्रहम् ॥१८६॥

वैराग्य विवेकादि, शुभाचरन के रक्षक भली भांति श्रीरामनाम है, परमानन्द स्वरूप है ॥१८६॥

अत्रि संहितायां श्रीशंकरवाक्यं पार्वती प्रति

येन केन प्रकारेण संस्मरेद्रामनामकम् ।
अवश्यं लभते सिद्धिं प्राप्तिरूपां मनोरमाम् ॥१८७॥

अत्रिमुनि की संहिता में श्रीशिववाक्य है पार्वतीजी से—कोई रीति से श्रीरामनाम करे तौ श्रीराम प्राप्ति रूप सिद्धि को अवश्य पाय जाय, मन को रमावनेवारी शक्ति श्रीरामनामाश्रित है ॥१८७॥

श्रीसद्रामेति नाम्नस्तु नियमं धारणं सदा ।
कर्तव्यं सावधानेन त्यक्त्वा प्रामादिकं शिवे ॥१८८॥

श्रीरामनाम का नियम सदा धारन करना उचित है, सावधान होयके ॥१८८॥

तावद्दै नियमं कार्यं यावत् चित्तं न संस्मरेत् ।
अनियमं कृतं जाप्यं निष्फलं प्रथमं प्रिये ॥१८९॥

जब तक चित्त स्मरन न करे तब तक नियम धारन करै। बिना नियम के जप नित्य प्रति चलि नहीं सकता है यह निष्फलता है ॥१८६॥

नियमेनैव श्रीरामनाम्नि प्रीतिर्ध्रुवा भवेत् ।
तस्माद्विपर्य्ययं त्यक्त्वा नियमं सञ्चरेद्बुधः॥१९०॥

नियम करते करते श्रीराम में निश्चल प्रीति प्रगट होती है ताते विपरीति त्यागि के नियमाचरन करे ॥१६०॥

अहोभाग्यमहो भाग्यंकलौ तेषां सदा शिवे ।
येषां श्रीरामनाम्नस्तु नियमं समखण्डितम् ॥१९१॥

अति आश्चर्य है बार-बार उनके भाग के सम भाग और कोई का नहीं, जिन महात्मन की प्रीति श्रीरामनाम नेम में अखण्ड लगी है सो धन्य से धन्य हैं ॥१६१॥

सनकसनन्दन संहितायाम्

हे जिह्वे मधुरप्रिये सुमधुरं श्रीरामनामात्मकं
पीयूषं पिब प्रेमभक्तिमनसा हित्वा विवादानलम् ।
जन्मव्याधिकषायकामशमनं रम्यातिरम्यं परं
श्रीगौरीशप्रियं सदैव सुभगं सर्वेश्वरं सौख्यदम् १६२

सनक सनातन संहिता में कहा है—हे रसने ! श्रीरामनाम स्वरूप महामन्त्र महापीयूष सत सहस्रसम मधुर तिसका पान निरन्तर प्रेम सम्पन्न मन समेत किया करना । नाना प्रकार के

विवादन को तजिके श्रीरामनामोच्चारन करने से अनेक रोग शोक जनममरनादि पीड़ा का नाश हो जायगा। श्रीरामनाम परम सुन्दर प्रिय प्रमोद प्रद है, श्रीशंकर के सर्वस्व जीवन हैं॥१६२॥

नाना तर्कवितर्कमोहगहने क्लिश्यन्ति मानवा-
स्तेषां श्रीरघुवीरनामविमलं सर्वात्मना सौख्यदम्॥
प्रेमानन्दपवित्ररंगरमणं सर्वाधिपं सुन्दरं
दृष्टं बोधमयं विचित्ररचनं सर्वोत्तमं शाश्वतम्॥१६३॥

नाना प्रकार का तर्क, विरूद्ध तर्क. मोह मायामय बन में भूलि के क्लेश उठावते हैं तिनको परम विश्रामप्रद श्रीरामनाम है। सब प्रकार से सुख सुधा सौंपनेवारे हैं, परम प्रेम प्रमोद विहार सबके दायक हैं, सबके स्वामी विशद बोधमय अविनाशी एक रस श्रीरामनाम हैं। पुनः-पुनः श्रीरामनाम परत्व महत्त्व का अभ्यास करते करते यथार्थ प्रीति प्रतीति अवश्यमेव हो जायगी सन्देह नहीं है॥१६३॥

श्रमं मृषैव कुर्वन्ति ज्ञानयोगादिसाधने।
कथं न भजते रामनाम सर्वेशपूजितम्॥१६४॥

ज्ञान योगादिक साधन में बृथा बहुत श्रम करते हैं, श्रीरामनाम परम दीनदयाल का स्मरन प्रेम बढ़ाय के क्यों नहीं करते जिसमें सब स्वार्थ का लाभ हो जाय। श्रीरामनाम सब ईश्वर केरके पूजित हैं॥१६४॥

सर्वेषां साधनानां वै परिपाकमिदं मुने।
यज्जिह्वाग्रे परं नाम जपेन्नित्यमतन्द्रितम्॥१६५॥

सब साधनन का परम फल हे मुनीश्वर जी! यही है के जीव के आगे सर्वदा श्रीरामनाम का उच्चारन बना रहे कोऊ

समय आलस न लगे, सावधान वृत्ति रहे ॥१९५॥

श्रीहनुमत् संहितायाम्

राम त्वत्तोऽधिकं नाम इति मे निश्चला मतिः ।
त्वया तु तारिताऽयोध्या नाम्ना तु भुवनत्रयम् ।१९६

श्रीहनुमत्संहिता में श्रीमहावीरजू का बचन श्रीरघुनाथजी से है राजगद्दी के समय—हे श्रीराम महाराज ! आपसे आपका नाम श्रेष्ठ है शीघ्र कृतार्थ करने में, इस धारना में हमारी सुमति अति निश्चल है । आपने केवल श्रीअवधवासी जीवों को कृतार्थ किया औ आपके नाम महाकृपासिन्धु ने तीनों लोक के प्रजान को तारि दिया । निरन्तर सब सृष्टि सब को तारते हैं। ताते नामी से नाम बड़ा है ॥१९६॥

हे जिह्वे ? जानकीजानेर्नाम माधुर्यमण्डितम् ।
भजस्व सततं प्रेम्णा चेद्वाञ्छसि हितं स्वकम् ॥१९७

हे रसने ! श्रीजानकीवल्लभजू का नाम महामधुर सदा उच्चारन करती रहो जो अपने समस्त मनोरथ को चाहती है ।१९७।

जिह्वे श्रीरामसंलापे विलम्बं कुरुषे कथम् ।
व्रीडा नायाति ते किञ्चिद्विना श्रीनाम सुन्दरम् ॥१९८॥

हे रसने ! श्रीरामनाम उच्चारन में बिलम्ब बृथा करती है तेर को लाज नहीं लगती श्रीरामनाम सुन्दर छोड़के अपरबात बकते हुये ॥१९८॥

रामनामात्मकं मंत्रं यन्त्रितं येन धारितम् ॥
तस्य क्वापि भयं नास्ति सत्यं सत्यं वदाम्यहम्॥१९९

श्रीरामनाममय महामन्त्र को यन्त्र बनाय के जो धारन करते हैं कण्ठादिक स्थानों में तिसको लोक परलोक में कोई

भय नहीं होता है श्रीरामनाम सम्बन्ध से ॥१९९॥

स्मरतोऽभीष्टमाप्नोति रामनामानुरागिणाम् ।
न जाने दर्शनस्पर्शपादोदकफलं यथा ॥२००॥

श्रीरामनाम अनुरागिन के स्मरन से सब मनोरथ सिद्धि हो जाते हैं औ सन्तन के दर्शन स्पर्श संभाषन चरनामृत के माहात्म्य को हम नहीं जानते हैं ॥२००॥

श्रीरामनामस्मरणात् सीतारामौ ममोपरि ।
कृपामहैतुकी नित्यं कृत्वा सर्वोत्तमां मुने ॥२०१॥

श्रीरामनाम स्मरन करने से श्रीसीताराम महाराज हम पर प्रसन्न होत भये अहेतुकी कृपा से सकल साधन साध्य फल स्वरूप करते भये श्रीरामनाम की अकथ महिमा है ॥२०१॥

यस्तु स्वप्ने वदेद्रामं संभ्रमस्खलनादिभिः ।
तस्य पादरजो मे तु मूर्धानमधिरोहतु ॥२०२॥

सदाशिव संहिता में श्रीहनुमानजी का बचन श्रीअगस्त्य प्रति है-जौन जन स्वप्न में बड़राय के भ्रम बस असावधान से गिरने खाने पीने समय में परबस भी श्रीरामनाम उच्चारन करता है तिस बड़भागी के चरन की रेनु हम अपने माथे पर चढ़ायके प्रसन्न होते हैं। विचारो कैसी महिमा श्रीरामनाम जप की है ॥२०२

रामनामात्मकं शब्दं श्रवणान्मुनिशिरोमणे ।
रामनामसमं पुण्यं फलं प्राप्नोति मानवः ॥२०३॥

श्रीरामनाम सम्बन्धी शब्द के सुनने से हे श्रीमुनीश्वर ! श्रीरामनाम जपने सम फल प्राप्त होता है अभिप्राय यह है के उच्चारन तथा गुन श्रवन फल प्रद है ॥२०३॥

रामनामगुणालापो सज्जनो रामवल्लभः ।
सत्यं वच्मि महाभाग रामनाम परात्परम् ॥२०४॥

श्रीरामनाम गुन के जापक सज्जन श्रीराम के परम प्रिय हैं हे महाभाग सत्य-सत्य हमारा वचन है श्रीराम सम्बन्धी सकल पदार्थ परमपद दायक है। सब भांति से श्रीरामनाम में स्नेह करना चाहिए सर्वोपरि विचारि के ॥२०४॥

इति श्रीसीताराम नामप्रतापप्रकाशे प्रमोदनिवासे परात्परैश्वर्यदायके भाषाटीकायां श्रीनामपरत्वप्रकाशिकायां श्रीयुगलानन्यशरण संगृहीते संहितावाक्यां प्रमाण निरूपणंनामतृतीयः प्रमोदः ॥ ३ ॥

अथ श्रीनाटकोक्त वचनानि निरूप्यते

श्रीहनुमन्नाटके श्रीहनुमद्वाक्यमगस्त्यं प्रति

इदं शरीरं शतसन्धिजर्जरं पतत्यवश्यं परिणामदुर्वहम्।
किमौषधंपृच्छसि मूढ दुर्मते निरामयं रामरसायनंपिब १

दोहा—शुचि संहिता प्रमानवर सावधान दृग देखु ।
युगलानन्य अयास बिनु परप्रभु प्रिय वपु पेखु ॥

श्रीहनुमन्नाटक में कहा है—यह शरीर सैकड़ों छिद्रन से सहित जर-जर पुराना महामलीन है अवश्यमेव अन्त में दुःख रूप है ऐसे रोग का औषधि हे मूढ़पति ! काहे को पूछते हो जो अपनी भलाई चाहते हो तौ निरामय श्रीरामनाम रस का पान करो और उपाय सब झूठ है ॥१॥

आसीनो वा शयानो वा तिष्ठतो यत्र कुत्र वा ।
श्रीरामनाम संस्मृत्य याति तत्परमं पदम् ॥२॥

बैठे सोये खड़े चलते जहां तहां रहे श्रीरामनाम सुखधाम

स्मरन करिके परम पद प्राप्त होयगा सन्देह बिना ॥२॥

ये जपन्ति सदा स्नेहान्नाम माङ्गल्यकारणम् ।
श्रीमतो रामचन्द्रस्य कृपालोर्मम स्वामिनः ॥३॥

जौन जन सनेह समेत महामंगलप्रद शुभ कारन मेरे श्रीरामचन्द्र का नाम लेते हैं ॥३॥

तेषामर्थे सदा विप्र प्रियातोऽहं प्रयत्नतः ।
ददामि वाञ्छितं नित्यं सर्वदा सौख्यमुत्तमम् ॥४॥

तिन जनन के सब सुख देने को हम समर्थ हैं उनका कोई विघ्न न हो सकेगा। महा उत्तम फल मनवांछित उनको हम देवेंगे सन्देह न करना ॥४।

रामनामैव नामैव सदा मज्जीवनं मुने ।
सत्यं वदामि सर्वस्वमिदमेकं सदा मम ॥५॥

श्रीरामनाम ही सकल भांति मेरे जीवन हैं, हे मुने! सर्वदा मेरो सर्वस्व धन श्रीरामनाम है ॥५॥

श्री जानकीपरिणय नाटके

महामणीन्द्रादपि काशतेऽधिकं
सदैव जिह्वाग्रप्रदीपयत्यलम् ।
आभ्यन्तरध्वान्तसबाह्यमुल्वणं
निवारणे शक्तमहर्निशं भजे ॥६॥

श्रीजानकीप्रणय नाटक में कहा है, श्रीशिव का वाक्य है- महामनीन्द्र सहस्रन से अधिक प्रकाशमान है औ जिह्वाग्र भाग में प्रदीप सम प्रकाशक है। भीतर-बाहर के सब पापमय तिमिर तोम हरने में समर्थतर है ऐसे श्रीरामनाम को हम सदा जपते हैं।६॥

सीतासमेत रघुवीरनाम जपन्ति ये नित्यमघौघहारि।